सोमवार
06 जुलाई 2026
● देहरादून
● वर्ष 34
● अंक 163
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

34 साल से देहरादून का विश्वास

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94 email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

उत्तराखण्ड में फर्जी डिग्री रैकेट का खुलासा, एक गिरफ्तार

◆हेमवती नंदन विश्व विद्यालय से सम्बन्धित कई फर्जी दस्तावेज बरामद

हमारे संवाददाता

पौड़ी। उत्तराखण्ड में शिक्षा जगत से जुड़े एक बड़े फर्जीवाड़े का खुलासा होने से तहलका मच गया है। हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय के नाम पर फर्जी मार्कशीट, डिग्रियां और अन्य शैक्षणिक दस्तावेज तैयार कर उनका इस्तेमाल करने वाले एक संगठित नेटवर्क का पुलिस ने भंडाफोड़ किया है। मामले में बड़ी कार्यवाही करते हुए पुलिस ने उत्तर प्रदेश के बिजनौर से एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है, जिसके कब्जे से विश्वविद्यालय से संबंधित कई फर्जी दस्तावेज बरामद किए गए हैं।

शिक्षा जगत से जुड़े इस बड़े फर्जीवाड़े के मामले का खुलासा तब हुआ जब एचएनबी गढ़वाल केंद्रीय विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक ने मार्च 2026 में श्रीनगर कोतवाली में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने बताया कि विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में कार्यरत अभ्यर्थियों की डिग्रियों और अंकतालिकाओं का सत्यापन विश्वविद्यालय से कराया जा रहा था। जब इन दस्तावेजों का विश्वविद्यालय के मूल रिकॉर्ड से मिलान किया गया तो कई मार्कशीट और डिग्रियां रिकॉर्ड से मेल नहीं खाईं। जांच में कई ऐसे दस्तावेज भी मिले जिनका कोई आधिकारिक रिकॉर्ड विश्वविद्यालय के पास मौजूद नहीं था। विश्वविद्यालय प्रशासन की जांच में सामने आया कि विश्वविद्यालय के नाम, आधिकारिक मोहर, डिग्री प्रारूप और संबंधित अधिकारियों के फर्जी हस्ताक्षरों का इस्तेमाल कर नकली शैक्षणिक दस्तावेज तैयार किए जा रहे थे। इन दस्तावेजों का कथित तौर पर नौकरी और अन्य सरकारी कार्यों में उपयोग किया जा रहा था।

मामले की गंभीरता को देखते हुए विश्वविद्यालय प्रशासन ने कुलपति को जानकारी दी, जिसके बाद श्रीनगर कोतवाली में शिकायत दर्ज कराई गई। शिकायत के आधार पर श्रीनगर कोतवाली में सम्बन्धित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी गयी। कोतवाली श्रीनगर की विशेष टीम ने तकनीकी साक्ष्यों और स्थानीय पुलिस की मदद से उत्तर प्रदेश के बिजनौर में छापेमारी कर नामजद आरोपी कासिफ कलीम को गिरफ्तार कर लिया।

पुलिस के अनुसार, आरोपी के कब्जे से गढ़वाल विश्वविद्यालय के नाम पर तैयार की गई कई फर्जी अंकतालिकाएं, कूटरचित डिग्रियां और अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज बरामद हुए हैं। आरोपी को न्यायालय में पेश कर आगे की कानूनी कार्रवाई की जा रही है। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह पहले डीएवी पीजी कॉलेज, देहरादून में बीएससी का छात्र था। परीक्षा में असफल होने के बाद उसने खुद को योग्य साबित करने और नौकरी हासिल करने के उद्देश्य से फर्जी मार्कशीट और शैक्षणिक दस्तावेज तैयार करना शुरू कर दिया। पुलिस का मानना है कि यह अकेले व्यक्ति का मामला नहीं बल्कि एक संगठित फर्जी डिग्री नेटवर्क हो सकता है। अब जांच इस बात पर केंद्रित है कि अब तक कितने लोगों ने इन नकली दस्तावेजों का इस्तेमाल कर नौकरी या अन्य लाभ हासिल किए हैं और इस गिरोह में और कौन-कौन लोग शामिल हैं। पुलिस का कहना है कि जांच के दौरान सामने आने वाले तथ्यों और साक्ष्यों के आधार पर आगे और भी गिरफ्तारियां हो सकती हैं।

84 हजार के नकली नोट सहित चार गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। उत्तराखण्ड में नकली नोट चलाने वाले एक गिरोह का खुलासा करते हुए पुलिस ने पंजाब के चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। जिनके पास से 500 रूपये के 169 नोट यानि 84, 500 रूपये की जाली नोट बरामद किये गये है। आरोपी कुछ जाली करैसी जनपद हरिद्वार व अन्य जगहों पर चला भी चुके है। जिनकी जांच की जा रही है।

जानकारी के अनुसार बीती रात सिटी कोतवाली पुलिस चेकिंग कर रही थी। इसी दौरान मेला अस्पताल की ओर से आते चार युवक पुलिस को संदिग्ध दिखाई दिए। पुलिस ने उन्हें रोकने का प्रयास किया तो वे वापस मुड़कर तेजी से भागने लगे, लेकिन बिल्केश्वर तिराहे से टिबड़ी तिराहे के बीच उन्हें दबोच लिया गया। तलाशी के दौरान चारों के पास से 500 के 169 जाली नोट बरामद हुए। पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ संबंधित धाराओं में मुकदमा दर्ज कर उन्हें गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्होंने गुरदासपुर (पंजाब) के ही एक व्यक्ति से 20,000 देकर 500 के 200 नकली नोट (कुल 1 लाख) खरीदे थे। इन नकली नोटों को असली बताकर बाजार में चलाने के लिए वे हरिद्वार आए थे। आरोपितों ने यह भी स्वीकार किया कि उन्होंने एक दिन पहले हरिद्वार के बाजारों में कुछ नकली नोटों से खरीदारी भी की थी। पुलिस अब इस पूरे गिरोह के मुख्य सप्लायर तक पहुंचने के लिए विशेष टीम गठित कर चुकी है। साथ ही जिन दुकानों पर नकली नोट चलाए गए, उनकी भी पहचान की जा रही है। बहरहाल पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है। आरोपियों के नाम सरजीत सिंह (58), टिंकू (29), सुमित कुमार (20), संजीव कुमार (47), निवासी गुरदासपुर, पंजाब बताए गए हैं। पुलिस ने सभी के खिलाफ विधिक कार्यवाही करते हुए उनका चालान कर दिया है।

दून वैली मेल

संपादकीय

बढ़ता एथनाल, घटती राहत

देश में पेट्रोल में एथनाल मिश्रण बढ़ाने की नीति को सरकार ऊर्जा क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश कर रही है। तर्क दिया जा रहा है कि इससे कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता घटेगी, विदेशी मुद्रा की बचत होगी, प्रदूषण कम होगा और गन्ना तथा मक्का उत्पादक किसानों को अतिरिक्त आय मिलेगी। इन उद्देश्यों से असहमत होने का कोई कारण नहीं है। दुनिया के कई देश वैकल्पिक ईंधन की ओर बढ़ रहे हैं और भारत को भी ऊर्जा सुरक्षा के लिए ऐसे विकल्प तलाशने ही होंगे। लेकिन किसी भी नीति की सफलता केवल उसके घोषित उद्देश्यों से नहीं, बल्कि उसके वास्तविक प्रभावों से तय होती है। इसी कसौटी पर एथनॉल मिश्रण की नीति कई सवालों के घेरे में दिखाई देती है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यदि पेट्रोल में अपेक्षाकृत सस्ता एथनाल मिलाया जा रहा है, तो उपभोक्ताओं को इसका लाभ क्यों नहीं मिल रहा? पिछले कुछ वर्षों में पेट्रोल में एथनाल मिश्रण का प्रतिशत तेजी से बढ़ा है, लेकिन पेट्रोल की कीमतों में वैसी कोई राहत दिखाई नहीं दी, जिसकी अपेक्षा की जा रही थी। आम उपभोक्ता के मन में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि यदि सरकार और तेल कंपनियां आयातित तेल पर निर्भरता कम करके बचत कर रही हैं, तो उस बचत का हिस्सा आखिर जनता तक क्यों नहीं पहुंच रहा? इस नीति का दूसरा पक्ष वाहनों की कार्यक्षमता से जुड़ा है। विशेषज्ञों का कहना है कि एथनाल की ऊर्जा क्षमता पेट्रोल की तुलना में कम होती है। इसका सीधा अर्थ यह है कि अधिक एथनाल मिश्रित ईंधन से कुछ वाहनों की माइलेज प्रभावित हो सकती है। यदि किसी वाहन को पहले जितनी दूरी तय करने के लिए अधिक ईंधन की जरूरत पड़ेगी, तो इसका सीधा असर उपभोक्ता की जेब पर पड़ेगा। देश में करोड़ों दोपहिया और चारपहिया वाहन ऐसे हैं, जिन्हें उच्च एथनाल मिश्रित ईंधन के अनुरूप तैयार नहीं किया गया है। ऐसे में इंजन की कार्यक्षमता, रख-रखाव और मरम्मत की बढ़ती लागत भी आम आदमी के लिए चिंता का विषय है। यह चिंता भी कम महत्वपूर्ण नहीं है कि एथनाल उत्पादन के लिए कृषि क्षेत्र पर दबाव बढ़ रहा है। गन्ने और मक्का जैसी फसलों का बड़ा हिस्सा अब ईंधन उत्पादन की ओर जा रहा है। भारत जैसे देश में, जहां खाद्य सुरक्षा अभी भी एक बड़ी चुनौती है, वहां खाद्यान्न और ईंधन के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं होगा। यदि भविष्य में कृषि संसाधनों का बड़ा हिस्सा ईंधन उत्पादन की ओर मुड़ता है, तो इसका असर खाद्य पदार्थों की उपलब्धता और कीमतों पर भी पड़ सकता है। महंगाई से पहले ही जूझ रहे आम नागरिक के लिए यह एक नई समस्या बन सकती है। पानी की बढ़ती कमी के बीच एथनॉल उत्पादन का एक और पहलू भी चर्चा में है। गन्ना एक ऐसी फसल है, जिसमें अत्यधिक पानी की आवश्यकता होती है। देश के कई राज्यों में भूजल स्तर लगातार गिर रहा है। ऐसे में यदि एथनाल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए जल-गहन फसलों पर अत्यधिक निर्भरता बढ़ती है, तो इसके दूरगामी पर्यावरणीय परिणाम भी सामने आ सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि ऊर्जा सुरक्षा की नीति पर्यावरणीय संतुलन और जल संरक्षण की चुनौतियों को नजरअंदाज न करे। सरकार यह अवश्य कह सकती है कि एथनाल मिश्रण से देश को दीर्घकालिक लाभ होंगे और आयात बिल में कमी आएगी। यह तर्क अपनी जगह सही भी है, लेकिन किसी भी आर्थिक सुधार का उद्देश्य केवल सरकारी बचत नहीं हो सकता। उसका अंतिम लाभ आम नागरिक तक पहुंचना चाहिए। यदि जनता को महंगा ईंधन, कम माइलेज और बढ़ती रख-रखाव लागत का सामना करना पड़े, तो फिर यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि इस नीति का वास्तविक लाभार्थी कौन है। यह भी आवश्यक है कि सरकार एथनाल मिश्रण के आर्थिक और तकनीकी प्रभावों पर एक व्यापक और पारदर्शी अध्ययन सार्वजनिक करे। जनता को यह बताया जाना चाहिए कि देश को अब तक कितनी विदेशी मुद्रा की बचत हुई, किसानों की आय में कितना वास्तविक सुधार आया और उपभोक्ताओं को क्या लाभ मिला। इसके साथ ही, पुराने वाहनों के लिए क्या व्यवस्था होगी और बढ़ते एथनाल मिश्रण से संभावित तकनीकी समस्याओं से निपटने के लिए क्या रोडमैप है। भारत को ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना ही होगा। वैकल्पिक ईंधन भी समय की आवश्यकता है, लेकिन किसी भी नीति की सफलता का अंतिम पैमाना यही होगा कि वह आम आदमी के लिए कितनी लाभकारी साबित हुई। ऊर्जा सुरक्षा का लक्ष्य स्वागतयोग्य है, लेकिन यह लक्ष्य तब और सार्थक होगा, जब उसके लाभ का बोझ जनता की जेब पर न पड़े, बल्कि उसे भी इस परिवर्तन का प्रत्यक्ष लाभ महसूस हो। अन्यथा एथनाल मिश्रण की यह महत्वाकांक्षी नीति जनता के मन में एक असहज प्रश्न छोड़ती रहेगीकृ कि क्या देश की ऊर्जा आत्मनिर्भरता की कीमत आम उपभोक्ता ही चुका रहा है?

मिशन 2027 से पहले कांग्रेस में बड़ा 'एक्शन'

❑भीतरघातियों को बाहर का रास्ता, गुटबाजी आई सामने
❑विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस ने दे दिया सख्त संदेश
❑कांग्रेस ने आक्रामक तेवर के बीच की अपनों पर कार्रवाई
❑अनुशासन के सहारे कांग्रेस संगठन को साधने की कवायद

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड विधानसभा चुनाव 2027 की आहट के साथ ही प्रदेश कांग्रेस ने अपने संगठन को लेकर सख्त रुख अपनाना शुरू कर दिया है। एक ओर पार्टी भाजपा सरकार के खिलाफ आक्रामक तेवर अपनाए हुए है, वहीं दूसरी ओर उसने अपने ही कार्यकर्ताओं और नेताओं पर अनुशासन का डंडा चलाना शुरू कर दिया है। हाल के दिनों में पार्टी विरोधी गतिविधियों, सार्वजनिक बयानबाजी और संगठन के खिलाफ काम करने के आरोप में कई नेताओं और कार्यकर्ताओं को बाहर का रास्ता दिखाया गया है। राजनीतिक गलियारों में कांग्रेस की इस कार्रवाई को विधानसभा चुनाव से पहले संगठन को एकजुट रखने और अनुशासन स्थापित करने की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है। हालांकि, यह कदम पार्टी के भीतर चल रही खींचतान और गुटबाजी को भी उजागर कर रहा है।

प्रदेश कांग्रेस नेतृत्व इस बार किसी भी कीमत पर अनुशासनहीनता को बर्दाश्त करने के मूड में नहीं दिख रहा है। पार्टी नेताओं का मानना है कि 2022 के विधानसभा चुनाव में टिकट वितरण से लेकर स्थानीय स्तर की गुटबाजी ने कांग्रेस को भारी नुकसान पहुंचाया था। कई सीटों पर पार्टी के अधिकृत प्रत्याशियों के खिलाफ बगावत और अंदरूनी विरोध ने चुनावी गणित बिगाड़ दिया था। इसी अनुभव को देखते हुए प्रदेश नेतृत्व ने स्पष्ट संकेत दिया है कि चुनाव से पहले संगठन विरोधी गतिविधियों में शामिल किसी भी नेता या कार्यकर्ता पर कार्रवाई की जा सकती है।

कांग्रेस इन दिनों महंगाई, बेरोजगारी, भू-कानून, पलायन, चारधाम यात्रा व्यवस्थाओं और भ्रष्टाचार के मुद्दों पर सरकार को घेरने की रणनीति पर काम कर रही है। लेकिन पार्टी नेतृत्व यह भी समझ रहा है कि यदि अंदरूनी कलह पर नियंत्रण नहीं हुआ तो भाजपा के खिलाफ आक्रामकता का राजनीतिक लाभ नहीं मिल पाएगा। यही कारण है कि कांग्रेस ने एक साथ दो मोर्चों पर लड़ाई शुरू की हैकृबाहर भाजपा के खिलाफ और भीतर असंतुष्ट एवं अनुशासनहीन नेताओं के खिलाफ। उत्तराखंड कांग्रेस लंबे समय से गुटबाजी की समस्या से जूझती रही है। पूर्व मुख्यमंत्री, वरिष्ठ नेताओं और क्षेत्रीय क्षत्रपों के अलग-अलग शक्ति केंद्रों ने कई बार संगठनात्मक फैसलों को प्रभावित किया है। ऐसे में पार्टी से कुछ कार्यकर्ताओं को बाहर करने भर से क्या गुटबाजी खत्म हो जाएगी, इस पर राजनीतिक विश्लेषकों की राय बंटी हुई है।

राजनीतिक जानकारों का कहना है कि अनुशासनात्मक कार्रवाई का संदेश तो जाएगा, लेकिन यदि असंतोष के कारणों का समाधान नहीं हुआ तो चुनाव नजदीक आते-आते बगावत के नए स्वर भी सामने आ सकते हैं। कांग्रेस की हालिया सक्रियता को टिकट की संभावित लड़ाई से भी जोड़कर देखा जा रहा है। चुनाव में अभी समय है, लेकिन कई विधानसभा क्षेत्रों में दावेदार सक्रिय हो चुके हैं। ऐसे में संगठन विरोधी गतिविधियों पर सख्ती को आगामी टिकट वितरण की तैयारी के रूप में भी देखा जा रहा है। पार्टी नेतृत्व नहीं चाहता कि 2027 से पहले किसी भी स्तर पर ऐसा माहौल बने, जिससे यह संदेश जाए कि कांग्रेस अभी भी अपने अंदरूनी संघर्षों से बाहर नहीं निकल पाई है।

कांग्रेस की ताजा कार्रवाई का राजनीतिक संदेश स्पष्ट हैकृजो पार्टी लाइन से हटेगा, उसके खिलाफ कार्रवाई होगी। लेकिन इसके साथ ही पार्टी के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह भी है कि अनुशासन और असंतोष के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए। क्योंकि उत्तराखंड की राजनीति में कांग्रेस की सबसे बड़ी कमजोरी भाजपा नहीं, बल्कि कई बार उसकी अपनी अंदरूनी खींचतान रही है। ऐसे में विधानसभा चुनाव से पहले अपने ही कार्यकर्ताओं पर कार्रवाई पार्टी को अनुशासित संगठन का चेहरा दे सकती है, लेकिन यदि यह असंतोष को और बढ़ाती है तो इसका उल्टा असर भी पड़ सकता है।

वही दूसरी ओर भाजपा लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी की रणनीति पर काम कर रही है, वहीं कांग्रेस सत्ता में लौटने के लिए हर मोर्चे पर संघर्ष का संदेश देना चाहती है। ऐसे में पार्टी का यह सख्त रुख आने वाले दिनों में और तेज हो सकता है। अब देखने वाली बात यह होगी कि कांग्रेस की यह अनुशासनात्मक मुहिम संगठन को मजबूत करती है या फिर चुनाव से पहले नए असंतोष और नए समीकरणों को जन्म देती है।

बदरीनाथ के 'खजाने' पर घमासान

◆पारदर्शी शासन के दावों की भी निकली हवा
◆विपक्ष ने उठाए चढ़ावे के प्रबंधन पर सवाल
◆साख बचाने की चुनौती में घिरी धामी सरकार
◆प्रदेश सरकार की चुप्पी से गरमा गई सियासत

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। भगवान बदरीविशाल के चरणों में चढ़ने वाला चढ़ावा अब राजनीतिक गलियारों में बड़ा मुद्दा बनता जा रहा है। बदरीनाथ धाम के चढ़ावे के प्रबंधन और उसके उपयोग को लेकर उठे सवालों ने धामी सरकार को विपक्ष के निशाने पर ला खड़ा किया है। विपक्ष जहां पूरे मामले में पारदर्शिता और जवाबदेही की मांग कर रहा है, वहीं सरकार इसे अनावश्यक विवाद बताकर बचाव की मुद्रा में दिखाई दे रही है। लेकिन राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह मामला केवल मंदिर प्रबंधन तक सीमित नहीं है, बल्कि सरकार की विश्वसनीयता और उसके पारदर्शी शासन के दावे की भी परीक्षा बन गया है।

उत्तराखंड की राजनीति में धार्मिक आस्था हमेशा से संवेदनशील विषय रही है। चारधाम यात्रा राज्य की आर्थिकी और सांस्कृतिक पहचान दोनों का आधार है। ऐसे में बदरीनाथ धाम के चढ़ावे को लेकर उठे सवाल सीधे करोड़ों श्र(ालुओं की भावनाओं से जुड़ गए हैं। सरकार के सामने सबसे बड़ी चुनौती आरोपों का खंडन नहीं, बल्कि भरोसा कायम रखने की है। यदि चढ़ावे के प्रबंधन में सब कुछ नियमों के अनुरूप है तो सरकार को विस्तृत जानकारी सार्वजनिक करने में संकोच क्यों होना चाहिए? यही वह सवाल है, जो विपक्ष को हमलावर होने का अवसर दे रहा है।

प्रदेश की राजनीति में लंबे समय से विपक्ष किसी ऐसे मुद्दे की तलाश में था, जो भाजपा सरकार को रक्षात्मक स्थिति में ला सके। अंकिता भंडारी प्रकरण, भर्ती घोटाले और भू-कानून जैसे मुद्दों के बाद अब बदरीनाथ चढ़ावा विवाद विपक्ष के हाथ में एक नया राजनीतिक हथियार बनता दिखाई दे रहा है। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दल इसे केवल वित्तीय पारदर्शिता का मामला नहीं, बल्कि आस्था और जवाबदेही का प्रश्न बना रहे हैं। उनका तर्क है कि जब सरकार हर क्षेत्र में पारदर्शिता की बात करती है, तो फिर मंदिरों से जुड़े आर्थिक मामलों में पूरी जानकारी सार्वजनिक क्यों नहीं की जाती? भाजपा की राजनीति का एक बड़ा आधार धार्मिक और सांस्कृतिक मुद्दे रहे हैं। पार्टी स्वयं को सनातन परंपराओं और धार्मिक आस्थाओं की संरक्षक के रूप में प्रस्तुत करती रही है। ऐसे में यदि आस्था के किसी मुद्दे पर सरकार सवालों के घेरे में आती है, तो उसका राजनीतिक असर सामान्य विवादों से कहीं अधिक होता है।

यदि सरकार समय रहते स्थिति स्पष्ट नहीं करती है तो विपक्ष इस मुद्दे को गांव-गांव तक ले जाने की कोशिश करेगा। 2027 के विधानसभा चुनाव भले अभी दूर हों, लेकिन राजनीतिक दलों ने अपने-अपने मुद्दों की जमीन तैयार करनी शुरू कर दी है। ऐसे में यह विवाद आने वाले समय में और बड़ा रूप ले सकता है।बदरीनाथ चढ़ावा विवाद ने एक बार फिर चारधाम देवस्थानम बोर्ड प्रकरण की यादें ताजा कर दी हैं। उस समय भी सरकार को तीव्र विरोध का सामना करना पड़ा था और अंततः उसे पीछे हटना पड़ा था। उस प्रकरण ने यह संदेश दिया था कि देवभूमि में धार्मिक मामलों पर सरकार को बेहद सतर्क रहना पड़ता है और संवादहीनता राजनीतिक संकट में बदल सकती है। आज की स्थिति भी कुछ वैसी ही प्रतीत हो रही है। सरकार जितना इस मुद्दे पर चुप रहने की कोशिश करेगी, उतने ही नए सवाल खड़े होंगे।

असल प्रश्न यह नहीं है कि चढ़ावे में कोई अनियमितता हुई है या नहीं। असली प्रश्न यह है कि क्या आस्था से जुड़े धन के

▶▶ शेष पृष्ठ 7 पर

मां नंदा की बड़ी जात और राजजात में स्थानीय को देंगे रोजगार

चमोली(आरएनएस)। इसी वर्ष आयोजित होने वाली मां नंदा की बड़ी जात और आगामी वर्ष नंदा राजजात के दौरान स्थानीय लोगों को स्वरोजगार से जोड़ने के उद्देश्य से रीप के माध्यम से सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी। इससे स्थानीय उत्पादों, सेवाओं व व्यवस्थाओं को बढ़ावा मिलेगा और यात्रा के माध्यम से स्थानीय लोगों की आजीविका के अवसर सुदृढ़ होंगे। नंदा बड़ी जात/राजजात की तैयारियों को लेकर मुख्य विकास अधिकारी डॉ. अभिषेक त्रिपाठी ने निर्माण कार्यों को लेकर समीक्षा बैठक की। सीडीओ ने कहा कि सभी कार्यों को निर्धारित समय सीमा पर पूरा कर लिया जाए। ताकि श्रद्धालुओं को किसी तरह की असुविधा न हो। कहा कि यात्रा पड़ावों पर महिला समूहों और ग्रामीणों को टेंट कॉलोनी व खाने-पीने के स्टॉल लगाने वालों को सहायता राशि उपलब्ध कराई जाएगी। सीडीओ ने कहा कि कर्णप्रयाग-नौटी-पैठाणी, नंदानगर-रामणी, थराली-मुंदोली-वाण और ग्वालदम-नंदकेसरी सड़क सहित अन्य राजजात के सभी पैदल मार्गों के सुधारीकरण व मरम्मत कार्य प्राथमिकता के साथ शीघ्र पूरे किए जाएं। बैठक में नंदा बड़ी जात/राजजात से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने तैयारियों, निर्माण कार्य, सुविधाओं सहित अन्य बिंदुओं पर सुझाव दिए। सीडीओ ने सभी सुझावों पर सकारात्मक कार्रवाई का आश्वासन देते हुए संबंधित विभागों को इसके लिए निर्देशित किया।

खाली पड़े भूखंडों पर बरातघर या सामुदायिक भवन बनाया जाए

नई टिहरी(आरएनएस)। जिला मुख्यालय के एल ब्लॉक के समीप खाली पड़ी भूमि पर बरातघर या सामुदायिक भवन का निर्माण किए जाने की मांग को लेकर भाजपा युवा मोर्चा के पूर्व जिला महामंत्री व सभासद विनीत उनियाल ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा।डीएम को सौंपे ज्ञापन में कहा कि वार्ड संख्या सात के एल ब्लॉक के समीप पुनर्वास निदेशालय टिहरी बांध परियोजना की ओर से विस्थापित परिवारों के लिए निर्मित भूखंड वर्षों से खाली पड़ा है। पुनर्वास निदेशालय ने पूर्व के वर्षों में उक्त भूखंड बांध प्रभावित पात्र लोगों को आवंटित किए थे लेकिन लोगों ने सभी भूखंडों को पुनर्वास विभाग को वापस कर दिया था जो गत कई वर्षों से खाली पड़े हैं।खाली भूखंडों में झाड़ियां उगी है। वाल्मिकी समाज के पास शादी-विवाह सहित अन्य कार्यक्रम करवाने वाले लिए कोई बरातघर या सामुदायिक भवन नहीं है। ऐसे में खाली भूखंड पर सामुदायिक भवन बनने से ये लोग इसका प्रयोग कर सकेंगे। इस मौके पर प्रियांशु, अकुंश, दिव्यांशु आदि मौजूद थे।

उपजिला चिकित्सालय को मिली तीन नई स्टाफ नर्सें

श्रीनगर गढ़वाल(आरएनएस)। उपजिला चिकित्सालय में स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की दिशा में तीन नई स्टाफ नर्सों ने विधिवत कार्यभार ग्रहण कर लिया। कुछ समय से अस्पताल में नर्सिंग स्टाफ की कमी बनी हुई थी। अस्पताल कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार कुछ समय पूर्व उपजिला चिकित्सालय से तीन स्टाफ नर्सों का तबादला देहरादून कर दिया गया था। इसके बाद अस्पताल में नर्सिंग स्टाफ की कमी महसूस की जा रही थी। अब उनके स्थान पर तीन नई स्टाफ नर्सों की तैनाती की गई है, जिन्होंने विधिवत जॉइनिंग दे दी।

बीडीओ के स्थानांतरण की मांग पर अड़े जनप्रतिनिधि

नई टिहरी(आरएनएस)। नरेंद्रनगर ब्लॉक में क्षेत्र पंचायत सदस्य और खंड विकास अधिकारी के बीच हुआ विवाद थम नहीं रहा है। क्षेत्र पंचायत सदस्य सिद्धार्थ राणा के खिलाफ तहरीर देने पर भड़के क्षेत्र पंचायत सदस्यों और प्रधान संगठन ने बीडीओ के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने डीएम को दिए ज्ञापन में बीडीओ पर आमजन के साथ अभद्र व्यवहार करने सहित कई आरोप लगाए हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि बीडीओ का शीघ्र स्थानांतरण नहीं किया गया तो आंदोलन शुरू किया जाएगा।नरेंद्रनगर की खंड विकास अधिकारी श्रुति वत्स ने ब्लॉक प्रमुख दीक्षा राणा के पति सिद्धार्थ राणा के खिलाफ सरकारी कामकाज में बाधा डालने, कार्यालय में जबरन प्रवेश करने और धमकी देने के आरोप में पुलिस में प्राथमिकी दर्ज कराई है। इस पर क्षेत्र पंचायत सदस्यों और प्रधान संगठन ने कड़ी नाराजगी जताई है।कलेक्ट्रेट पहुंचे प्रतिनिधिमंडल ने डीएम को दिए ज्ञापन में बीडीओ के खिलाफ कार्रवाई करने और झूठी तहरीर वापस लेने की मांग की है। उन्होंने प्रमुख दीक्षा राणा के साथ भी कई बार अशोभनीय व्यवहार किया है। क्षेत्र पंचायत सदस्य सिद्धार्थ राणा के साथ दुर्व्यवहार कर उनके खिलाफ फर्जी तहरीर देकर सदस्यों को डराने का प्रयास किया जा रहा है।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

'बेडू' में है पहाड़ की मिठास और लोकजीवन की पहचान

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। बेडू पाको बारामासा, ओ नरैणा...पहाड़ का यह अमर लोकगीत केवल एक गीत नहीं, बल्कि पहाड़ की संस्कृति, प्रकृति और लोकजीवन का जीवंत दस्तावेज है। इस गीत में जिस बेडू का जिक्र है, वह आज भी पहाड़ के जंगलों, खेतों की मेड़ों और गांवों के आसपास प्राकृतिक रूप से उगता हुआ दिखाई देता है। बदलते समय और आधुनिक खानपान के बीच भी बेडू की मिठास पहाड़ की स्मृतियों में आज भी उतनी ही ताजा है।

बेडू जंगली अंजीर की एक प्रजाति है, जो पहाड़ के मध्य हिमालयी क्षेत्रों में प्राकृतिक रूप से उगती है। इसका पेड़ अधिक ऊंचा नहीं होता, लेकिन इसकी शाखाएं घनी होती हैं और गर्मियों से बरसात के बीच इसमें फल लगते हैं। पकने पर इसका रंग गहरा बैंगनी या लालिमा लिए होता है और स्वाद मीठा तथा हल्का दानेदार होता है। पहाड़ के बच्चों के लिए बेडू केवल एक फल नहीं, बल्कि गर्मियों की छुट्टियों की यादों का हिस्सा है। स्कूल से लौटते समय जंगलों से बेडू तोड़ना और दोस्तों के साथ बैठकर खाना पहाड़ी बचपन की अनमोल स्मृतियों में शामिल रहा है।

पहाड़ के प्रसि(लोकगीत बेडू पाको बारामासा ने इस फल को वैश्विक पहचान दिलाई। इस गीत में बेडू केवल एक फल नहीं, बल्कि पहाड़ की समृ(प्रकृति और लोक संस्कृति का प्रतीक बनकर उभरता है। पहाड़ी समाज में बेडू को आत्मीयता, सरलता और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का प्रतीक माना जाता रहा है। कई गांवों में आज भी बुजुर्ग बताते हैं कि कठिन दौर में जंगलों के ये फल लोगों के लिए अतिरिक्त पोषण का स्रोत बने। बेडू में प्राकृतिक शर्करा, फाइबर, कैल्शियम, आयरन और कई प्रकार के एंटीआक्सीडेंट पाए जाते हैं। स्थानीय लोग इसे पाचन के लिए लाभकारी मानते हैं। आयुर्वेद में भी अंजीर वर्ग के फलों को स्वास्थ्यवर्धक माना गया है।

❑जंगलों में पकता है स्वाद, लोकगीतों में बसती इसकी महक
❑आज भी प्रकृति की गोद में मुस्कुराती बेडू की वह मिठास
❑बदलते दौर में भी फीकी नहीं पड़ी पहाड़ की यह पहचान

विशेषज्ञों का कहना है कि पहाड़ के ऐसे पारंपरिक फल आधुनिक जीवनशैली से जुड़ी कई समस्याओं के समाधान में सहायक हो सकते हैं। आज जब लोग जैविक और प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की ओर लौट रहे हैं, तब बेडू जैसे फल नई संभावनाओं के साथ सामने आ रहे हैं। दुर्भाग्य यह है कि नई पीढ़ी का एक बड़ा वर्ग अब बेडू से उतना परिचित नहीं है, जितनी पिछली पीढ़ियां थीं। जंगलों से दूरी, बदलती जीवनशैली और बाजार आधारित खानपान ने पारंपरिक फलों को धीरे-धीरे हाशिए पर पहुंचा दिया है।

कई गांवों में अब भी बेडू के पेड़ खड़े हैं, लेकिन उन्हें पहचानने और उनके महत्व को समझने वाले लोग कम होते जा रहे हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि यदि इन पारंपरिक फलों का वैज्ञानिक संरक्षण और व्यावसायिक मूल्यांकन किया जाए तो यह स्थानीय आजीविका का भी महत्वपूर्ण स्रोत बन सकते हैं। पहाड़ के जंगलों में स्वत: उगने वाला यह फल केवल स्वाद नहीं देता, बल्कि अपनी जड़ों से जुड़े रहने का संदेश भी देता है।

जब भी कहीं दूर से बेडू पाको बारामासा... की धुन सुनाई देती है, तो उसके साथ पहाड़ की पगडंडियां, जंगलों की खुशबू और बचपन की यादें भी लौट आती हैं। बेडू पहाड़ की सांस्कृतिक विरासत का मीठा स्वाद है, जिसे सहेजना आने वाली पीढ़ियों के लिए उतना ही जरूरी है, जितना अपने पहाड़ और अपनी लोक परंपराओं को बचाए रखना।

छात्रावास तैयार, छात्राओं को नहीं मिल रहा लाभ

उत्तरकाशी(आरएनएस)। राजकीय महाविद्यालय चिन्यालीसौड़ में नवनिर्मित महिला छात्रावास तैयार होने के बावजूद अभी तक संचालित नहीं हो पाया है। इससे दूरदराज क्षेत्रों से आने वाली छात्राओं को छात्रावास की सुविधा का लाभ नहीं मिल रहा है। महाविद्यालय प्रशासन का कहना है कि छात्रावास के संचालन के लिए शासन स्तर से वार्डन, सुरक्षा गार्ड सहित अन्य आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की स्वीकृति और व्यवस्था अभी मिलनी बाकी है। साथ ही, हॉस्टल का संचालन पीपीपी मोड अथवा सरकार की ओर से सीधे किए जाने संबंधी शासन के निर्देशों का भी इंतजार किया जा रहा है। प्राचार्य प्रो. प्रभात द्विवेदी ने बताया कि छात्रावास भवन तैयार होने की सूचना उच्च शिक्षा विभाग को भेज दी गई है। शासन से आवश्यक निर्देश मिलते ही छात्रावास का संचालन शुरू कर दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि हॉस्टल शुरू होने पर दूरस्थ क्षेत्रों से आने वाली करीब 52 छात्राओं को इसका सीधा लाभ मिलेगा। जानकारी के अनुसार, मंडी परिषद की ओर से करीब तीन करोड़ 62 लाख 80 हजार की लागत से इस छात्रावास का निर्माण कराया गया। निर्माण कार्य जनवरी 2022 में शुरू हुआ था और जुलाई 2023 में पूरा हो गया था। इसके बाद इसी वर्ष जनवरी में निर्माणदायी संस्था ने छात्रावास भवन महाविद्यालय प्रशासन को हैंडओवर कर दिया। हालांकि भवन का निर्माण और हैंडओवर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी अभी तक छात्रावास का उद्घाटन नहीं हो पाया है। ऐसे में छात्राओं और अभिभावकों को उम्मीद है कि शासन स्तर से आवश्यक औपचारिकताएं जल्द पूरी होंगी और लंबे समय से प्रतीक्षित गर्ल्स हॉस्टल का संचालन शुरू हो सकेगा।

बरसात से पहले नालों की सफाई और टूटी पुलिया की मरम्मत की मांग

हरिद्वार(आरएनएस)। बरसात के मौसम में संभावित जलभराव और दुर्घटनाओं की आशंका को देखते हुए शहर व्यापार मंडल, मध्य हरिद्वार ने मुख्य नगर अधिकारी, नगर निगम हरिद्वार को विभिन्न जनसमस्याओं के समाधान की मांग को लेकर ज्ञापन सौंपा।

व्यापारियों ने चेतावनी दी कि समय रहते व्यवस्थाएं दुरुस्त नहीं की गईं तो बारिश के दौरान व्यापारियों और आम लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। व्यापार मंडल के अध्यक्ष मृदुल कौशिक ने बताया कि चंद्राचार्य चौक से भगत सिंह चौक तक दोनों ओर स्थित नालों की अब तक सफाई नहीं कराई गई है, जिससे बरसात में जलभराव की स्थिति बन सकती है। वहीं रेलवे अंडरपास के नीचे नाले पर लगे लोहे के स्लैब क्षतिग्रस्त हैं और कई स्थानों पर गड्ढे बने हुए हैं, जिनसे आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। उपाध्यक्ष राजेश कश्यप ने कहा कि मध्य हरिद्वार में कई स्थानों पर नालों के स्लैब टूटे हुए हैं। लोग इन पर फुटपाथ की तरह आवाजाही करते हैं, जिससे हादसे की आशंका बनी रहती है।

शहर मंत्री कार्तिक शर्मा ने मॉडल कॉलोनी जाने वाले मार्ग पर पुलिया के दोनों ओर बने गड्ढों को तत्काल भरने की मांग की।मीडिया प्रभारी हिमांशु सैनी ने कहा कि कई स्थानों पर सड़क का बरसाती पानी नालों में जाने के निकास बंद पड़े हैं, जिन्हें तत्काल खोला जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इन समस्याओं से नगर निगम को पहले भी अवगत कराया जा चुका है, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। बरसात के दौरान यह क्षेत्र हर वर्ष जलभराव से प्रभावित रहता है, इसलिए समस्याओं का प्राथमिकता के आधार पर समाधान कराया जाना जरूरी है।

ज्ञापन सौंपने वालों में अशोक अग्रवाल, सतीश भाटिया, जगजीवन राम, पराग चकलान, उमेंद्र सिंह, प्रवीण अग्रवाल, आकाश चौहान, नवीन जुनेजा, संजय पवार, जय वर्मा सहित अन्य व्यापारी मौजूद रहे।

कम बजट में घूमने की है योजना? इन 5 बातों का ध्यान रखकर करें प्लानिंग

अगर आप बजट में घूमने की योजना बना रहे हैं तो आपको कुछ बातों का खास ध्यान रखना चाहिए। इससे आपका अनुभव सुखद और यादगार रहेगा। बजट में यात्रा करने से न केवल आपकी जेब पर भार नहीं पड़ेगा, बल्कि आपको नई जगहों का आनंद लेने और वहां की संस्कृति को करीब से जानने का मौका भी मिलेगा। आइए जानते हैं कि बजट में घूमने के लिए क्या-क्या करना चाहिए।

यात्रा की योजना बनाएं

यात्रा की योजना बनाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले तय करें कि आपको कहां जाना है और वहां कैसे पहुंचना है। अपने बजट का हिसाब रखें और देखें कि कौन सी सेवाएं आपके लिए सस्ती और सुविधाजनक हो सकती हैं। इसके अलावा यात्रा के दौरान क्या-क्या करना है, कहां ठहरना है और क्या-क्या देखना है, इसकी भी योजना बनाएं। इससे आपकी यात्रा सुचारू और मजेदार रहेगी।

स्थानीय परिवहन का उपयोग करें

बजट में यात्रा करने के लिए स्थानीय परिवहन का उपयोग करना अच्छा विकल्प हो सकता है। यह न केवल सस्ता होता है, बल्कि इसमें घूमने से आपको स्थानीय लोगों से मिलने और उनकी संस्कृति को जानने का मौका भी मिलता है। बस, ट्रेन या ऑटो रिक्शा जैसे साधनों का उपयोग करके आप नए अनुभव प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा स्थानीय परिवहन से आपकी यात्रा अधिक रोमांचक और यादगार बन सकती है, जिससे आपको नई जगहों का असली मजा मिलेगा।

खाने-पीने पर ध्यान दें

यात्रा करते समय आपको हमेशा अच्छा और सस्ता भोजन करना चाहिए। होटल रेस्टोरेंट के बजाय स्थानीय ढाबों या सड़क किनारे मिलने वाले खाने का आनंद लें। इससे न केवल आपका खर्चा कम होगा, बल्कि आपको असली स्वाद और अनुभव भी मिलेगा। स्थानीय व्यंजनों का सेवन करके आप वहां की संस्कृति और जीवनशैली को करीब से जान सकते हैं। इसके अलावा स्थानीय खाने से आपकी सेहत भी बेहतर बनी रहती है।

मुफ्त में घूमने वाली जगहों पर जाएं

हर शहर या देश में कुछ ऐसी जगहें होती हैं, जहां जाने के लिए आपको पैसे खर्च करने की जरूरत नहीं पड़ती। इन जगहों पर जाकर आप वहां की प्राकृतिक सुंदरता, पुरानी धरोहर और सांस्कृतिक विविधता का आनंद ले सकते हैं। पार्क, संग्रहालय, पहाड़ या समुद्र तट जैसी जगहें आपकी बजट यात्रा का हिस्सा बन सकती हैं। इनसे न केवल आपका खर्चा बचेगा, बल्कि आपको नई जगहों की असली खूबसूरती देखने को मिलेगी।

समूह में यात्रा करें

अगर संभव हो तो समूह में यात्रा करें, जिससे आपके पैसे बच जाएंगे। इससे आपकी लागत कम आएगी, क्योंकि समूह में यात्रा करने पर आप होटल और गाड़ी आदि खर्चों को बांट सकते हैं। इसके अलावा समूह में यात्रा करने से आपको नए दोस्त बनाने का मौका मिलता है और साथ-साथ कई मजेदार अनुभव भी मिलते हैं। यह तरीका न केवल आपकी जेब पर हल्का रहेगा, बल्कि यात्रा को और भी यादगार और रोमांचक बना देगा।

सेब के फायदे जानकर हो जाएंगे हैरान

सेब ऐसा फल है जिसे आप रोज खाएं तो आपको जल्दी डॉक्टर के पास जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी, क्योंकि इसमें विटामिन, मिनरल्स, फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट भरपूर मात्रा में होते हैं। सबसे पहले बात करते हैं पाचन की, तो सेब में मौजूद पेक्टिन नाम का घुलनशील फाइबर आंतों की सफाई करता है, पाचन को मजबूत बनाता है और कब्ज, गैस जैसी दिक्कतों से राहत देता है। जो लोग अक्सर पेट खराब या अनियमित पाचन से परेशान रहते हैं, उनके लिए सेब काफी फायदेमंद माना जाता है। दिल के लिए भी यह फल एक तरह से ढाल का काम करता है, क्योंकि इसमें मौजूद फाइबर खराब कोलेस्ट्रॉल को कम करने में मदद करता है और ब्लड फ्लो को बेहतर बनाए रखता है। इससे हार्ट अटैक और स्ट्रोक का जोखिम कम हो सकता है। वजन घटाने में भी ये काफी फायदेमंद होता है। सेब कम कैलोरी वाला है और इसे खाने से पेट देर तक भरा रहता है, जिससे बार-बार खाने की आदत नियंत्रित होती है। जो लोग वेट लॉस डाइट कर रहे हों, उनके लिए यह एक बढ़िया विकल्प है। सेब ब्लड शुगर को भी धीरे-धीरे बढ़ाता है, इसलिए डायबिटीज वाले लोग इसे सीमित मात्रा में खा सकते हैं। यह उनकी भूख को शांत रखता है और ऊर्जा भी देता है।

दिमाग के लिए भी यह फल कमाल का माना जाता है, क्योंकि इसके एंटीऑक्सीडेंट दिमाग की कोशिकाओं को नुकसान से बचाते हैं और याददाश्त में सुधार करने में मदद करते हैं। त्वचा और बालों की बात करें तो सेब में मौजूद विटामिन सी स्किन को ग्लो देता है, झुर्रियां कम करता है और हेयर फॉल को कंट्रोल करने में भी मददगार माना जाता है।

इसके नियमित सेवन से इम्युनिटी भी बढ़ती है, जिससे शरीर संक्रमणों से बेहतर तरीके से लड़ पाता है। सेब को छिलके सहित खाना ज्यादा बेहतर माना जाता है, क्योंकि फाइबर का ज्यादातर हिस्सा छिलके में ही होता है। दिन में एक से दो छोटे या मध्यम आकार के सेब आप खा सकते हैं।

इयरफोन, कहीं गंभीर समस्या का कारण ना बन जाए!

आज के इस दौर में हम सब इयरफोन के इतने आदी हो चुके हैं कि अगर हम अपना इयरफोन कहीं भूल जाते हैं तो किसी और का इस्तेमाल करने लगते हैं। ऐसा करना आपके लिए घातक साबित हो सकता है। जी हां, दूसरे का इयरफोन इस्तेमाल करने से आप बेहरेपन के शिकार हो सकते हैं। तो अगर आप भी ऐसा कुछ कर रहें हैं तो सावधान हो जाइए।

क्या कहते हैं जानकार

इयरफोन को लेकर डब्ल्यूएचओ ने दावा किया है कि इयरफोन के ज्यादा इस्तेमाल के कारण दुनिया भर में लगभग 1०० करोड़ युवाओं की सुनने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। इसके साथ ही स्टडी में बताया गया है कि अगर कोई भी इंसान दो घंटे से ज्यादा और 9० डेसिबल से अधिक इयरफोन में तेज आवाज में गाना सुनता है तो उसे सुनने में दिक्कत हो सकती है। सिर्फ इतना ही नहीं इयरफोन के ज्यादा इस्तेमाल से आपको दिल की बीमारियां भी हो सकती है और दिमाग पर इसका नेगेटिव असर पड़ सकता है।

इन्फेक्शन का खतरा

ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ हेल्थ एंड एलाइड साइंसेज में प्रकाशित एक अध्ययन से पता चलता है कि इयरफोन का बराबर इस्तेमाल करना कान में बैक्टीरिया की संख्या को बढ़ा सकता है। कान में मौजूद मैल सिर्फ चिपचिपा नहीं होता बल्कि उसमें अत्यधिक बैक्टीरिया भी पाया जाता है। ओआरएल हेड नेक नर्सिंग के एक अध्ययन ने ये साबित भी कर दिया कि अगर आपने किसी के साथ इयरफोन शेयर कर लिया तो इन्फेक्शन का खतरा बढ़ सकता है और ये एक इंसान से दूसरे इंसान तक फैल सकता है।

इयरफोन में लगी रबड़ गंदगी को आसानी से निकलने नहीं देती है और उसी में फंसी रहती है जिसकी वजह से बैक्टीरिया बनने लगता है। कानों में माइक्रोबियल फ्लोरा आमतौर पर स्यूडोमोनस और स्टेफिलोकोकस होते हैं। इसीलिए जब आप किसी के साथ इयरफोन शेयर करते हैं तो बैक्टीरिया आपके कान में फैल सकता है और संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है। इसके अलावा अगर आपके कान में किसी भी प्रकार की चोट या कट लगा है तो आपको कई तरह के स्किन इन्फेक्शन हो सकता है।

इयरफोन से हो सकते हैं ये सारे भी खतरें

इसके अलावा जब आप आपने इयरफोन को बहुत सारे जगहों पर देते हैं तो इससे उसमें जर्म्स लग सकते हैं। किसी और का इयरफोन इस्तेमाल करने से आपको फंगस, ब्लैकहैड्स और स्पॉट जैसी समस्याएं हो सकती है। इसलिए अपने इयरफोन को समय-समय पर साफ करते रहें, ताकि इन्फेक्शन से बचा जा सके।

स्वस्थ रहने के लिए डेली रुटीन में अपनाएं ये नियम

स्वस्थ रहने के लिए इंसान तरह-तरह की बातों पर ध्यान जरूर देता है लेकिन कुछ ऐसी छोटी बातें भी होती हैं जिनको नजरअंदाज करना सेहत के लिए भारी नुकसानदायक साबित हो सकता है। ऐसे ही कुछ खास और बेहतरीन नियमों के बारे में आज यहां आपको बताया जाएगा, जो कि सेहतमंद बने रहने के लिए डॉक्टरों के द्वारा भी सुझाए जाते हैं। यह ना केवल आपकी दिनचर्या में सुधार लाएंगे बल्कि कई प्रकार की गंभीर बीमारियों से भी आपको बचाए रख सकते हैं। इन नियमों के बारे में आपको नीचे बिंदुवत रूप में बताया जा रहा है। इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़िए और अपनी दिनचर्या में शामिल करने के लिए भरपूर प्रयास करिए।

1.रोज सुबह उठने के बाद आपको सबसे पहले एक से दो गिलास गुनगुना पानी पीना चाहिए। यह शरीर से टॉक्सिक पदार्थ को निकालने और पेट को साफ करने के लिए बहुत जरूरी होता है।

2.सुबह नाश्ते में कुछ खाने के बाद ही आपको चाय पीनी चाहिए, नहीं तो यह सेहत के लिए नुकसानदायक साबित हो सकती है।

3.कब्ज से पीड़ित लोगों को शाम के समय पपीते का सेवन जरूर करना चाहिए। इसके अलावा फाइबर युक्त खाद्य पदार्थों का सेवन करके भी कब्ज से राहत पाई जा सकती है।

4.दांतों की अच्छी देखभाल के लिए रात को सोने से पहले दांत साफ करें और उसके बाद एक गिलास पानी पीकर ही सोएं।

5.खाना खाने के दौरान कभी भी पानी ना पिएं। इससे पाचन क्रिया पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है और आप भरपेट खाना भी नहीं खा सकते हैं। खाना खाने के हमेशा आधे घंटे बाद ही पानी पिएं।

6.रात में सोते समय अपने आसपास मोबाइल फोन ना रखें। इसमें कनेक्ट होने वाली रेडियो एक्टिव किरणें आपके दिमाग को सोते समय नुकसान पहुंचा सकती हैं।

7.प्रतिदिन एक्सरसाइज या फिर योग का अभ्यास जरूर करें। यह आपको कई गंभीर बीमारियों के खतरे से बचाए रखेगा।

शब्द सामर्थ्य -079

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. घुमाव-फिराव वाला, आड़ा-तिरछा, जो कठिन हो 3. कुशलता, दक्षता, विशेषज्ञता 6. लोग, प्रजा 7. सीता, जनकनंदनी 9. सुंदर, कामना करने योग्य 10. क्रोधपूर्वक बोलने को उद्यत होना, जोश में आना, क्रोधातिरेक में चेहरे का लाल होना 13. अधीनता, मातहती, वश 14. दबाव, भार, वजन 16. हद, मर्यादा 18. प्रमाण-पत्र, प्रमाणिक कथन या बात 19. पछताना (मुहा.) 21. अनुचित मिश्रण, मिलावट 22. विफल, बेहोश, बौखलाया हुआ।

ऊपर से नीचे

1. सहारा, आश्रय, प्रतिज्ञा, संकल्प 2. परिश्रम 4. रात, रात्रि, निशा 5. पुत्र, बेटा 8. मूल्य, दाम 9. कपड़े का मोटा परदा 11. संदेश भेजना, उच्चारण कराना, कहलवाना 12. मृतकों को जीवित और रोगियों को स्वस्थ कर देने वाला व्यक्ति, प्रेमपात्र की संज्ञा 14. देने की क्रिया, खैरात 5. कुमार्गी, दुराचारी 17. मस्तक, माथा, ललाट 18. प्रश्न, समस्या 20. सहायता, सहारा 21. पशुओं को खिलाने वाली हरी पत्तियां, तृण, तिनका।

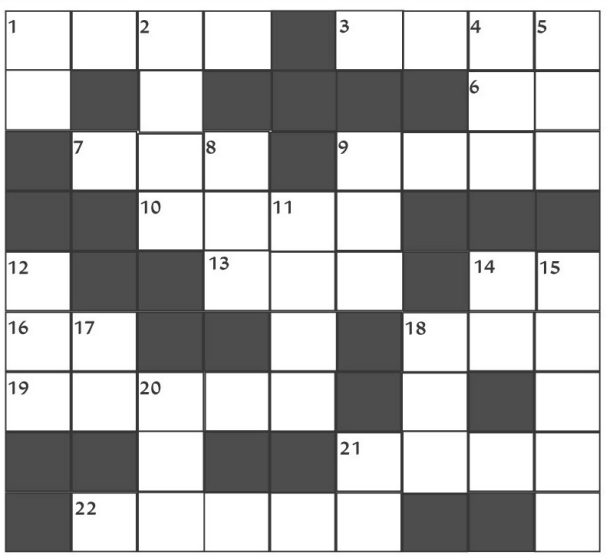

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 78 का हल

ज	द्दो	जे	ह	द	■	स	पू	त
ल	■	ब	ल	वा	न	■	■	द
म	ह	क	■	खा	म	खां	■	बी
ग्न	■	त	ल	ना	■	स	फ	र
■	म	रा	■	■	■	ना	टा	■
■	हि	■	स	■	■	■	फ	न
■	ला	ज	वा	ब	■	म	ट	र
मां	■	ग	■	सं	त	ति	■	भ
■	मा	त	ह	त	■	■	प	क्षी

मॉनसून में क्यों बढ़ जाती है गालों पर खुजली होने की समस्या!

बहुत बार ऐसा होता है कि गालों पर खुजली शुरु हो जाती है और बंद होने का नाम ही नहीं लेती है। ये समस्या आपको काफी हद तक परेशान कर सकती है। कई बार ये खुजली अपने आप ठीक हो जाती है लेकिन कई बार ये इतनी ज्यादा हो जाती है कि आपको इससे असहजता भी हो सकती है। गालों पर खुजली किसी भी मौसम में हो सकती है लेकिन ये समस्या मॉनसून के समय ज्यादा देखी जाती है। गालों पर लगातार खुजली होने के कारण आपको कई बीमारी भी हो सकती है। इसलिए इसे नजरअंदाज करना बिलकुल भी सही नहीं है। आइए जानते हैं गालों पर खुजली होने का क्या कारण हो सकता है।

धूप

गालों पर लगातार खुजली की समस्या का कारण धूप भी हो सकता है। अक्सर धूप में जाने की वजह से या ज्यादा देर धूप में रहने की वजह से सनबर्न हो जाता है जो खुजली का कारण हो सकता है। तो अगर आपकी स्किन सेंसटिव है तो कोशिश करें कि गालों को सीधा धूप के कॉनटैक्ट में ना लाएं।

गलत प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल

गालों पर खुजली का सबसे बड़ा कारण हो सकता है गलत स्किन केयर प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल करना। बहुत बार ऐसा होता है कि लोग बिना सोचे समझे मेकअप प्रोडक्ट खरीद लेते हैं जो उनके लिए एलर्जी का कारण बन सकता है जिसकी वजह से गालों पर खुजली शुरु हो सकती है। इसलिए कोई भी नया प्रोडक्ट ट्राई करने से पहले उसका पैच टेस्ट जरूर करें ताकी आप होने वाले एलर्जी से बच सकें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि गालों पर ज्यादा कैमिकल वाले प्रोडक्ट का इस्तेमाल ना करें और अपने स्किन के मुताबिक ही प्रोडक्ट को चुने।

गंदगी

कई बार चेहरे की ठीक से सफाई ना होने के कारण भी खुजली की समस्या हो सकती है। खासकर पुरुषों में अगर वो दाढ़ी बड़ी रखते हैं और ठीक से सफाई नहीं करते हैं तो खुजली होनी शुरु हो जाती है। ऐसे में कोशिश करें कि चेहरे की सफाई के लिए फेस वॉश का इस्तेमाल करें। महिलाएं अपना मेकअप हटाने के लिए डायरेक्ट फेस वॉश के इस्तेमाल से बचें क्योंकि मेकअप के छोटे कण त्वचा में अंदर जाने पर इंफेक्शन का कारण बन सकते हैं। फेस वॉश की जगह आप गुलाब जल या टोनर का इस्तेमाल कर सकती हैं।

सोरायसिस बीमारी

कई बार गालों पर खुजली होने की समस्या को हम सामान्य समझकर छोड़ देते हैं लेकिन ये सोरायसिस जैसे स्किन इंफेक्शन के लक्षण हो सकते हैं। ऐसे में अगर लगातार गालों पर खुजली की समस्या के साथ लाल चकत्ते भी दिखाई दें तो डॉक्टर को तुरंत दिखाएं क्योंकि इस बीमारी को टालने से ये बढ़ भी सकती है।

पित्ती

पित्ती की समस्या के बारे में आपने जरूर सुना होगा। यह एक प्रकार की स्किन एलर्जी है जिसमें त्वचा पर चकत्ते उभर आते हैं और बहुत तेज खुजली होनी शुरु हो जाती है। वैसे तो यह बीमारी कुछ दिन में अपने आप ठीक हो जाती है लेकिन ऐसी समस्या होने पर डॉक्टर को जरूर दिखाएं और कोशिश करें कि पित्ती हो जाने पर खुजली करने से बचें।

गालों पर खुजली से बचने के लिए स्किन को हाइड्रेट रखें। रूखी स्किन के कारण भी खुजली की समस्या होती है। स्किन प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल बहुत सावधानी से चुनें। मेकअप ब्रश को नियमित तौर पर साफ करें। गालों पर खुजली की समस्या ज्यादा बढ़ने पर डॉक्टर को अवश्य दिखाएं।

मधुमेह के नियंत्रण में मददगार है बेलपत्र

आयुर्वेद में बेलपत्र के पौधे को धार्मिक आस्था के साथ-साथ औधीय दृटिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। विोज्ञों के अनुसार, बेलपत्र न सिर्फलाइलाज माने जाने वाले मधुमेह के नियंत्रण में मददगार है, बल्कि यह पाचन, इंफेकन और ारीर की गर्मी जैसी कई समस्याओं में भी राहत पहुंचाता है। आयुर्वेद में बेल के पेड़ की पत्तियों और फ्लों को स्वास्थ्य के लिए लाभकारी बताया गया है। बेलपत्र में विटामिन-ए, सी, बी6, कैलियम, फाइबर और पोटैीयम जैसे पोाक तत्व भरपूर मात्रा में मौजूद होते हैं। इनमें एंटीऑक्सीडेंट भी पाए जाते हैं, जो ारीर को संक्रमण से बचाने में सहायक होते हैं। उनके अनुसार, सुबह खाली पेट बेलपत्र का सेवन करने से रक्तचाप नियंत्रित होता है और मधुमेह के लक्षणों में भी कमी आती है। विोज्ञों के अनुसार, बेलपत्र का नियमित सेवन रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। यह पाचन से जुड़ी समस्याओं जैसे अपच, पेट में जलन, वात और कच्ची डकार में भी कारगर होता है। इसमें पाया जाने वाला फाइबर पेट को साफ रखने में मदद करता है और सुबह खाली पेट पत्ते चबाने से पेट संबंधी तकलीफों में राहत मिलती है। मधुमेह के रोगियों के लिए बेलपत्र किसी औाधि से कम नहीं।

यह खून में ुगर के स्तर को संतुलित करता है, जिससे इससे जुड़ी अन्य जटिलताओं से भी बचाव हो सकता है। बुखार की स्थिति में बेलपत्र का रस पीने से लाभ होता है और सिरदर्द की स्थिति में बेलपत्र चबाना या उसका लेप लगाना आराम पहुंचाता है। हालांकि, इसका सेवन मौसम के अनुसार किया जाना चाहिए। सर्दियों में इसे सीमित मात्रा में और काली मिर्च के साथ सेवन करने की सलाह दी जाती है, ताकि ारीर में संतुलन बना रहे। गर्मियों में बेल का फ्ल ठंडक देने वाला होता है और इसका रस ारीर की तपन को कम करने के साथ-साथ पाचन तंत्र को भी ठंडा रखता है।

अब होगा हिसाब की शूटिंग के दौरान घर जैसा महसूस हुआ:निमरत कौर

अभिनेत्री निमरत कौर अहलूवालिया इन दिनों अपनी आने वाली सीरीज अब होगा हिसाब को लेकर चर्चा में हैं। इसमें वहपंजाब की लड़की का किरदार निभा रही है। इस सीरीज की शूटिंग के दौरान उन्हें कैसा महसूस हुआ, इस पर उन्होंने खुलकर बात की। निमरत कौर अहलूवालिया ने कहा, इस सीरीज में मैं पंजाब की लड़की का किरदार निभा रही हूं। चूंकि मैं खुद भी पंजाबी हूं, इसलिए शूटिंग के दौरान मुझे हर चीज काफी जानी-पहचानी लगी। पंजाब की भाषा, वहां के लोग और वहां की संस्कृति मेरे लिए कुछ भी नई नहीं थी। यही वजह रही कि किरदार निभाते समय मुझे किसी तरह का दबाव महसूस नहीं हुआ और मेरा प्रदर्शन स्वाभाविक रूप से सामने आया। अभिनेत्री ने कहा, शूटिंग के पहले दिन से ही मुझे ऐसा महसूस हो रहा था, जैसे मैं किसी सेट पर नहीं बल्कि अपने घर में हूं। आसपास का माहौल और लोगों से बातचीत के चलते मैं जल्दी ही उस वातावरण में घुल-मिल गई। मेरा मानना है कि जब कलाकार अपने माहौल से जुड़ा हुआ महसूस करता है, तो उसका असर सीधे उसके अभिनय पर दिखता है। इसी वजह से मैं अपने किरदार में ज्यादा सहज और वास्तविक महसूस कर पाई।

निमरत कौर ने कहा, इस प्रोजेक्ट में मुझे सबसे बड़ी राहत इस बात की थी कि मुझे किसी नई जगह या नई संस्कृति में खुद को ढालने की जरूरत नहीं पड़ी। मैं बिना किसी दबाव के सीधे किरदार की भावनाओं पर ध्यान दे सकी और मैंने पूरी तरह से कहानी में खुद को डूबो दिया।

सीरीज की शूटिंग के अनुभव को याद करते हुए उन्होंने बताया, इस पूरे सफर को खास बनाने में डायरेक्टर का बड़ा योगदान रहा। डायरेक्टर ने सेट पर ऐसा माहौल तैयार किया जिसमें हर कलाकार खुद को सहज महसूस कर सके। खासकर जब कहानी भावनात्मक रूप से भारी हो, तब एक सकारात्मक माहौल होना बहुत जरूरी होता है।

अभिनेत्री निमरत कौर ने कहा, पूरी टीम के बीच मजबूत तालमेल था। हर कोई एक-दूसरे के साथ मिलकर काम कर रहा था। मेरे को-स्टार संजय कपूर के साथ काम करना भी मेरे लिए एक खास अनुभव रहा। वह भी मेरी तरह पंजाबी हैं, इसलिए हमारा अलग ही बॉन्ड था। शूटिंग के दौरान हमने खूब सारी बातचीत और हंसी-मजाक किया।

अभिनेत्री ने पंजाब के स्थानीय लोगों की तारीफ करते हुए कहा, यहां के लोगों ने हमें बहुत प्यार दिया। कई बार स्थानीय परिवारों ने शूटिंग यूनिट के लिए अपने घर का बना खाना भेजा। जब लोग इस तरह से दिल से स्वागत करते हैं, तो शूटिंग टीम खुद को बाहरी नहीं, बल्कि उसी समुदाय का हिस्सा महसूस करने लगती है।

फूड सेफ्टी पर काजल अग्रवाल ने अपनी दमदार पोस्ट से छेड़ी अहम बहस

देशभर में फूड एडल्टरेशन यानी खाद्य मिलावट को लेकर बढ़ती चिंताओं के बीच फ़िल्म द इंडिया स्टोरी की अभिनेत्री काजल अग्रवाल ने एक बार फिर इस गंभीर मुद्दे की ओर सभी का ध्यान खींचा है।

हाल ही में अपनी सोशल मीडिया स्टोरी के जरिए उन्होंने भारतीय आमों के निर्यात पर कीटनाशक अवशेष और क्वारंटीन संबंधी चिंताओं को लेकर सामने आई रिपोर्ट्स साझा की है। इस मुद्दे को उन्होंने अपनी आगामी फिल्म द इंडिया स्टोरी से जोड़ते हुए लिखा है, दुर्भाग्य से यह भारत की कहानी है, ये द इंडिया स्टोरी है। फिलहाल इस पोस्ट के बाद सोशल मीडिया पर चर्चा तेज हो गई है, क्योंकि फिल्म की कहानी भी खाद्य मिलावट जैसे गंभीर विषय और उसके सार्वजनिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले खतरनाक प्रभावों के इर्द-गिर्द घूमती है।

ज़ी स्टूडियोज़ और एमआईजी प्रोडक्शन एंड स्टूडियोज़ के सहयोग से प्रस्तुत इस फिल्म में काजल अग्रवाल के साथ श्रेयस तलपड़े भी अहम भूमिका में नजर आनेवाले हैं। फिल्म का उद्देश्य उस सच्चाई को सामने लाना है, जो हर दिन लाखों परिवारों को प्रभावित करती है। फिल्म का निर्देशन चेतन डीके ने किया है, जबकि कहानी और निर्माण सागर बी.शिंदे ने संभाली है।

द इंडिया स्टोरी 24 जुलाई 2026 को दुनियाभर के सिनेमाघरों में हिंदी, तेलुगु और तमिल भाषाओं में रिलीज़ होगी। सामाजिक रूप से प्रासंगिक विषय और प्रभावशाली संदेश के साथ यह फिल्म सिर्फ मनोरंजन तक सीमित नहीं रहना चाहती, बल्कि एक जरूरी राष्ट्रीय चर्चा की शुरुआत करने का लक्ष्य रखती है।

फिल्म के सह-निर्माताओं में स्वाति विनायक सैदाने, अनिता जाधव, विनायक सैदाने, कल्पेश शाह, देवयानी खोराते और प्रेम जोशी शामिल हैं। वहीं तकनीकी टीम में सिनेमैटोग्राफर निशांत भागवत, संगीतकार मंगेश धाकड़े, एडिटर आशीष म्हात्रे, गीतकार शकील आज़मी और साउंड डिज़ाइनर अनमोल भावे शामिल हैं।

बदहाल सड़क पर फूटा व्यापारियों का गुस्सा

उत्तरकाशी(आरएनएस)। मोरी बैंड से राजकीय इंटर कॉलेज तक जाने वाली सड़क की बदहाल स्थिति को लेकर स्थानीय व्यापारियों में रोष है। व्यापार मंडल ने सड़क की तत्काल मरम्मत और जल निकासी की समुचित व्यवस्था की मांग रखी है। चेतावनी दी है कि यदि जल्द सुधार कार्य शुरू नहीं किया गया तो व्यापारी और क्षेत्रवासी आंदोलन करने को मजबूर होंगे। व्यापार मंडल का कहना है कि मोरी बैंड से राजकीय इंटर कॉलेज तक का यह मार्ग क्षेत्र का प्रमुख संपर्क मार्ग है। इसी सड़क पर करीब आधा दर्जन शिक्षण संस्थान संचालित हैं, जहां प्रतिदिन बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं, अभिभावक और शिक्षक आवागमन करते हैं। इसके अलावा पीएमजीएसवाई, जल संस्थान, वन विभाग और वन निगम सहित कई सरकारी कार्यालय भी इसी मार्ग पर स्थित हैं जिससे अधिकारियों, कर्मचारियों और आम लोगों की आवाजाही लगातार बनी रहती है। व्यापार मंडल अध्यक्ष अंकित पंवार ने कहा कि महत्वपूर्ण मार्ग होने के बावजूद सड़क की हालत बेहद खराब हो चुकी है। जगह-जगह बने गड्ढों के कारण वाहन चालकों और पैदल राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। उधर, पीएमजीएसवाई के सहायक अभियंता सुभाष दौरियाल ने बताया कि सड़क किनारे प्रस्तावित नालियों के बीच पेयजल लाइन बिछी हुई है जिसके स्थानांतरण और समाधान के लिए प्राक्कलन भेजा गया है। उन्होंने कहा कि बारिश के दौरान चोक नालियों को तत्काल खुलवाया जाता है। साथ ही सड़क पर बने गड्ढों को भरने के लिए संबंधित ठेकेदार को निर्देशित कर दिया गया है और जल्द ही मरम्मत कार्य शुरू कराया जाएगा।

भटवाड़ी में चल रहे आंदोलन को मिला मातृशक्ति का समर्थन

उत्तरकाशी(आरएनएस)। भटवाड़ी क्षेत्र की केवि की स्थापना, ऑल वेदर रोड का निर्माण व अधिकारी-कर्मचारी नियमित ब्लॉक में बैठने की मांग को लेकर ग्रामीण और जनप्रतिनिधियों का आंदोलन लगातार उग्र होता जा रहा है। क्षेत्र की महिलाओं ने धरनास्थल पर पहुंचकर समर्थन दिया। महिलाओं ने सरकार और प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए चेतावनी दी कि जल्द समस्या हल नहीं हुई तो क्षेत्र में व्यापक जन आंदोलन छेड़ा जाएगा और सरकारी कार्यालयों में तालाबंदी की जाएगी। भटवाड़ी गांव में आयोजित धरने में बैठे लोगों ने कहा कि क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं को लेकर लंबे समय से शासन और प्रशासन का ध्यान आकर्षित किया जा रहा है लेकिन अब तक कोई ठोस पहल नहीं की गई है। ग्रामीणों का कहना है कि उनकी तीन प्रमुख मांगें हैं। पहली, भटवाड़ी में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना की जाए ताकि क्षेत्र के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए दूर-दराज़ न जाना पड़े। दूसरी, क्षेत्र में ऑल वेदर सड़क निर्माण कार्य को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाए, जिससे वर्षभर सुरक्षित और सुगम यातायात उपलब्ध हो सके।तीसरी, सभी सरकारी विभागों के अधिकारी और कर्मचारी अपने-अपने कार्यालयों में नियमित रूप से उपस्थित रहें, ताकि आम जनता को छोटे-छोटे कार्यों के लिए अनावश्यक परेशानियों का सामना न करना पड़े। उन्होंने जल्द ही शासन प्रशासन से सकारात्मक कार्रवाई न होने पर सरकारी कार्यालयों में तालाबंदी करने की चेतावनी दी।

सू- दोकू क्र.079

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.78 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2

सेवा सप्ताह के तहत विभिन्न स्थानों पर लगेंगे आधार शिविर

अल्मोड़ा(आरएनएस)। जनपद में उत्तराखण्ड शासन के निर्देशानुसार सेवा, सुशासन एवं समर्पण अभियान के तहत 1० जुलाई तक सेवा सप्ताह मनाया जाएगा।

जिलाधिकारी अंशुल सिंह ने बताया कि आम जनता को आधार संबंधी सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सेवा सप्ताह के दौरान विभिन्न स्थानों पर आधार शिविर आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक शिविर के लिए संबंधित अधिकारियों को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। शनिवार को जिला मुख्यालय के मल्ला महल में आधार शिविर आयोजित होगा, जिसके नोडल अधिकारी मुख्य विकास अधिकारी होंगे। विकासखंड ताड़ीखेत के जीआईसी कुनेलाखेत में शिविर लगाया जाएगा, जिसकी जिम्मेदारी खंड विकास अधिकारी ताड़ीखेत को सौंपी गई है।

सोमवार, 6 जुलाई को विकासखंड सल्ट के राजकीय इंटर कॉलेज मानिला में आधार शिविर आयोजित होगा, जिसके नोडल अधिकारी खंड विकास अधिकारी सल्ट होंगे। मंगलवार, 7 जुलाई को विकासखंड स्याल्दे के राजकीय इंटर कॉलेज मालीखेत में शिविर लगाया जाएगा। बुधवार, 8 जुलाई को विकासखंड लमगड़ा के राजकीय प्राथमिक विद्यालय शहरफाटक में आधार शिविर आयोजित होगा। गुरुवार, 9 जुलाई को विकासखंड द्वाराहाट के जनता उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छानागोलू में आधार शिविर लगाया जाएगा। इन शिविरों के लिए संबंधित खंड विकास अधिकारियों को नोडल अधिकारी नामित किया गया है। शुक्रवार, 1० जुलाई को विकासखंड भैसियाछाना के राजकीय प्राथमिक विद्यालय दसौ तथा विकासखंड चौखुटिया के राजकीय इंटर कॉलेज तड़ागताल में भी आधार शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन दोनों शिविरों के लिए संबंधित खंड विकास अधिकारियों को नोडल अधिकारी बनाया गया है। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों से निर्धारित तिथियों पर अपने निकटतम शिविर में पहुंचकर आधार संबंधी सेवाओं का लाभ उठाने की अपील की है।

असंग्रहित गणना प्रपत्र वाले मतदाताओं का होगा दोबारा सत्यापन

अल्मोड़ा (आरएनएस)। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) कार्यक्रम के तहत ऑनलाइन माध्यम से जनपद के सभी उप जिलाधिकारियों, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (ईआरओ) और सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (एईआरओ) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्यों की समीक्षा करते हुए आगामी चरणों की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में बताया गया कि जनपद अल्मोड़ा में गणना प्रपत्रों के डिजिटलीकरण का कार्य पूरा हो चुका है। जिन मतदाताओं के गणना प्रपत्र किसी कारणवश बीएलओ को प्राप्त नहीं हो सके हैं, उन्हें फिलहाल असंग्रहित (अनकलेक्टेबल) श्रेणी में रखा गया है। अधिकारियों ने बताया कि ऐसे मतदाताओं के पास अभी भी अपना गणना प्रपत्र जमा करने का अवसर उपलब्ध है। वे वर्ष 2००3 की मतदाता सूची में उपलब्ध अपने विवरण के आधार पर निर्वाचन आयोग की वेबसाइट के माध्यम से गणना प्रपत्र भर सकते हैं या संबंधित बीएलओ को जमा कर सकते हैं। बैठक में असंग्रहित श्रेणी के मतदाताओं के पुन: सत्यापन पर विशेष जोर देते हुए सभी उप जिलाधिकारियों, ईआरओ और एईआरओ को निर्देश दिए गए कि बीएलओ स्तर पर ऐसे मामलों की दोबारा समीक्षा कराई जाए और प्रत्येक पात्र मतदाता का सत्यापन सुनिश्चित किया जाए, ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति मतदाता सूची से वंचित न रहे। साथ ही विशेष गहन पुनरीक्षण कार्यक्रम के आगामी चरणों की सभी तैयारियां निर्धारित समयसीमा के भीतर पूरी करने के निर्देश भी दिए गए, जिससे निर्वाचन आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप समस्त कार्य समयबद्ध ढंग से संपन्न किए जा सकें।

आमसौड़ के दोनों स्कूलों के विलय करने का विरोध

कोटद्वार(आरएनएस)। दुगड्डा ब्लॉक की ग्रामसभा आमसौड़ व जमरगड्डी के ग्रामीणों ने जूनियर हाईस्कूल और हाईस्कूल आमसौड़ को क्लस्टर विद्यालय जीआईसी दुगड्डा में विलय किए जाने का विरोध किया। ग्रामीणों ने शासन और शिक्षा विभाग से विलय के आदेश वापस लेने की मांग की।दोनों ग्राम सभाओं के ग्रामीणों की जूनियर हाईस्कूल आमसौड़ में बैठक हुई। ग्रामीणों का कहना था कि आमसौड़ से दुगड्डा की दूरी करीब पांच किलोमीटर है। अधिकांश परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हैं। बैठक में पूर्व क्षेत्र पंचायत सदस्य कुंदन सिंह, अंजू देवी, ग्राम प्रधान आमसौड़ कुमारी रेशमा, सुनीता देवी, शकुंतला देवी, दुर्गा सिंह बिष्ट, ओम चंद्र, त्रिलोक सिंह मौजूद रहे।

गंगातट पर हुआ संस्कृत छात्रों का उपनयन संस्कार

ऋषिकेश(आरएनएस)। श्री मुनीश्वर वेदांग संस्कृत विद्यालय के नए छात्रों का उपनयन संस्कार विधि-विधान से हुआ। गंगा तट पर आचार्य जितेंद्र भट्ट और आचार्य सुरेश पंत ने संस्कार संपन्न कराया। स्वामी माधवाश्रम समाधि संस्थान जनार्दन आश्रम दंडी बाड़ा मायाकुंड में पंचांग पूजन किया गया।

यज्ञ और शास्त्रीय विधि विधान से यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया। छात्रों को यज्ञोपवीत धारण करवाते हुए केशव स्वरूप ब्रह्मचारी ने कहा कि बालकों को शास्त्रों ने यज्ञोपवीत (उपनयन) संस्कार करने का निर्देश किया है।

उन्होंने कहा कि वेदों के अध्ययन एवं गायत्री की उपासना के लिए उपनयन संस्कार का होना जरूरी है, बिना उपनयन संस्कार के यज एवं वेदों का अध्ययन नहीं किया जाता है। समय पर यदि उपनयन संस्कार किया जाय तो बच्चे की बल बुद्धि भी परिष्कृत होती है, सनातनी संस्कार भी बालक के जीवन में निरूपित होते हैं, जिससे बालक का आने वाला जीवन आनंददायी होता है।

उन्होंने वैदिक बटुकों से सनातन धर्म के प्रचार प्रसार ओर वैदिक संस्कृति की रक्षा करने का आह्वान किया।

पेयजल संकट पर यूकेडी का जल संस्थान कार्यालय में प्रदर्शन!

अल्मोड़ा(आरएनएस)। नगर में पिछले एक सप्ताह से पेयजल आपूर्ति बाधित होने के विरोध में उत्तराखंड क्रांति दल (यूकेडी) के कार्यकर्ताओं ने जल संस्थान के अधिशासी अभियंता का घेराव कर प्रदर्शन किया।

प्रदर्शनकारियों ने पेयजल व्यवस्था में सुधार की मांग करते हुए विभाग पर करोड़ों रुपये खर्च होने के बावजूद लोगों को नियमित और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध नहीं कराने का आरोप लगाया।

यूकेडी नेताओं ने कहा कि वर्ष 2०24-25 और 2०25-26 में जिला योजना के तहत जल संस्थान को करोड़ों रुपये की धनराशि आवंटित की गई। इसके अलावा रखरखाव के लिए भी अलग से बजट दिया गया, लेकिन मानसून की हल्की बारिश के बाद ही नगर में पेयजल संकट गहरा गया है। उनका आरोप था कि करोड़ों रुपये की लागत से फिल्टर पंप लगाए जाने के बावजूद लोगों को मटमैला पानी मिल रहा है।

प्रदर्शन के दौरान यूकेडी ने स्थानीय विधायक की भूमिका पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि जिला एवं राज्य योजना की बैठकों में बजट आवंटन की जानकारी होने के बावजूद पेयजल संकट पर कोई प्रभावी पहल नहीं की गई। संगठन ने कहा कि एक सप्ताह से नगर के कई क्षेत्रों में जलापूर्ति प्रभावित है, जिससे आम जनता को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। यूकेडी ने अधिशासी अभियंता को चेतावनी दी कि यदि कोसी नदी में सिल्ट का हवाला देकर पेयजल आपूर्ति बाधित की गई तो संगठन आंदोलन तेज करेगा। साथ ही मांग की कि नगर के सभी घरों में पानी के मीटर लगाए जाएं और उपभोक्ताओं से वास्तविक खपत के आधार पर ही बिल वसूला जाए। संगठन ने लोगों से भी अपील की कि मीटर व्यवस्था लागू होने तक वे केवल उतने ही दिनों का जलकर जमा करें, जितने दिन उन्हें पानी की आपूर्ति हुई है। प्रदर्शन में यूकेडी के जिलाध्यक्ष दिनेश जोशी, केंद्रीय संयुक्त सचिव त्रिलोक लटवाल, विनय किरौला, पान सिंह लाटवाल, अभिषेक बनौला सहित संगठन के पदाधिकारी और स्थानीय नागरिक मौजूद रहे।

सेवा पखवाड़ा सरकार और जनता के बीच भरोसे का सेतुः महाराज

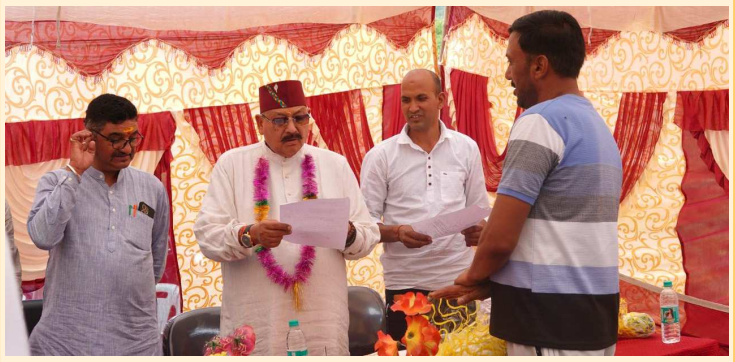

हमारे संवाददाता

पौड़ी। सेवा पखवाड़ा सिर्फ एक आयोजन नहीं, सरकार और जनता के बीच भरोसे का सेतु है। इसके माध्यम से सरकार अपने कार्यों को जनता के सामने रखती है और जनता अपनी समस्याओं को सीधे सरकार के सामने रखती है।

यह बात प्रदेश के पर्यटन, लोक निर्माण, सिंचाई, ग्रामीण निर्माण, धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री एवं चौबट्टाखाल विधायक सतपाल महाराज ने अपने क्षेत्र भ्रमण के तीसरे दिन आज विकासखण्ड बीरोंखाल के भरपूर बड़ा, नेग्याणा, कसाणी, हलाड़, सैंधार, भरोलीखाल, कमलिया वल्ला आदि स्थानों पर भाजपा कार्यकर्ता सम्मेलन, सशक्त मंडल, सशक्त संगठन के अंतर्गत कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रतिभा करते हुए कही। इस मौके पर उन्होंने 2 करोड़ 71 लाख की धनराशि से बनने वाले भगवती तलिया-कमलिया 5 किमी मोटर मार्ग में आरसीसी सेतु, 39.18 लाख की लागत से सैंधार-नेग्याणा-चोरखिण्डा मोटर मार्ग के सुधारीकरण, डामरीकरण कार्य और ग्राम पंचायत कैलाड़ में 10 लाख धनराशि से निर्मित होने वाले पंचायत भवन का भी शिलान्यास किया।

इस अवसर पर प्रदेश के कैबिनेट मंत्री और चौबट्टाखाल विधायक सतपाल महाराज ने जगह-जगह भाजपा कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों के साथ बैठक और जनसंपर्क कर जनता की समस्याओं को सुनने के अलावा उनका मौके पर समाधान करने का भी प्रयास किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के नेतृत्व में क्षेत्र का चहुंमुखी विकास हो रहा है। सरकार के द्वारा चौबट्टाखाल विधानसभा क्षेत्र में भूमियाखांडा-किंगोड़ीधार पंपिंग पेयजल योजना, डांडा नागराजा ग्राम समूह पंपिंग पेयजल योजना, वेदीखाल पंपिंग पेयजल योजना, बरसुण्डा देवता पंपिंग योजना, भैरोंगढ़ी पम्पिंग पेयजल योजना, जूनीसेरा चौबट्टाखाल पंपिंग पेयजल योजना और हलूणी पेयजल योजनाओं सहित करोड़ों रुपए की कई प्रमुख पेयजल और सिंचाई पंपिंग योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

दस दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। 84 उत्तराखंड बटालियन एनसीसी, रुड़की के तत्वावधान में क्वांटम विश्वविद्यालय, मंडावर में आज से दस दिवसीय वार्षिक प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। शिविर में हरिद्वार जनपद के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से आए 587 एनसीसी कैडेट्स तथा 8 सहयोगी एनसीसी अधिकारी प्रतिभाग कर रहे हैं। दिन-रात संचालित होने वाले इस प्रशिक्षण शिविर में कैडेट्स को शस्त्र प्रशिक्षण, मैप रीडिंग, दूरी का आकलन, फील्ड सिग्नल, आपदा प्रबंधन, व्यक्तित्व विकास एवं नेतृत्व क्षमता सहित एनसीसी के विभिन्न सैन्य एवं व्यवहारिक विषयों का व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। शिविर के प्रथम दिवस सभी कैडेट्स का बायोमेट्रिक पंजीकरण किया गया तथा उनके द्वारा लाए गए समस्त कैंप दस्तावेजों का गहन सत्यापन एवं परीक्षण सुनिश्चित किया गया। इस अवसर पर कैंप कमांडेंट कर्नल जगदीश अलमिया ने एनसीसी प्रशिक्षण शिविर के सफल आयोजन हेतु विश्वविद्यालय परिसर उपलब्ध कराने के लिए संस्था के चेयरमैन अनिल गोयल के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने शिविर के सुव्यवस्थित संचालन एवं उत्कृष्ट व्यवस्थाओं के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विवेक कुमार तथा कुलसचिव डॉ. अमित दीक्षित का भी धन्यवाद ज्ञापित किया।

बदरीनाथ के 'खजाने' पर घमासान.... ◀◀ पृष्ठ 2 का शेष

प्रबंधन में पूर्ण पारदर्शिता है? क्या श्र(ालुओं को यह जानने का अधिकार नहीं है कि उनके द्वारा चढ़ाई गई धनराशि का उपयोग किन कार्यों में हो रहा है? और क्या सरकार इस पूरे मामले पर स्वतंत्र आडिट या श्वेत पत्र जारी करने को तैयार है? इन सवालों के जवाब जितनी देर से आएंगे, विवाद उतना ही गहराता जाएगा।

धामी सरकार के लिए यह विवाद केवल एक प्रशासनिक चुनौती नहीं, बल्कि एक राजनीतिक संदेश भी है। जनता अब केवल घोषणाओं और दावों से संतुष्ट नहीं होती। वह पारदर्शिता और जवाबदेही चाहती है। खासकर तब, जब मामला आस्था से जुड़ा हो। देवभूमि की राजनीति में जनता बहुत बारीकी से देखती है कि सरकार धार्मिक मामलों में कितना संवेदनशील और पारदर्शी व्यवहार करती है। इसलिए बदरीनाथ चढ़ावा विवाद का असर केवल एक समाचार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह आने वाले दिनों में सरकार की राजनीतिक परीक्षा का एक महत्वपूर्ण विषय बन सकता है। जब करोड़ों श्र(ालुओं की आस्था का धन दांव पर हो, तब सरकार की चुप्पी संदेह को जन्म देती है। ऐसे में सवाल उठना स्वाभाविक हैकृक्या सरकार पारदर्शिता से स्थिति स्पष्ट करेगी या फिर यह विवाद 2027 की राजनीति का नया मुद्दा बन जाएगा?

कांवड़ यात्रा का सकुशल संचालन सरकार की प्राथमिकताः डीएम

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। 30 जुलाई से प्रारंभ होने वाली पावन कांवड़ यात्रा-2026 के सफल, सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित संचालन को लेकर जिलाधिकारी मयूर दीक्षित ने आज जिला कार्यालय सभागार में संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि कांवड़ यात्रा का सकुशल एवं व्यवस्थित संचालन राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

जिलाधिकारी ने सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि अपने-अपने विभाग से संबंधित सभी तैयारियां निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण करें तथा किसी भी स्तर पर लापरवाही या शिथिलता न बरती जाए। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि कांवड़ यात्रा से संबंधित सभी व्यवस्थाएं 25 जुलाई तक हर हाल में पूर्ण कर ली जाएं। उन्होंने सिंचाई विभाग को कांवड़ पटरी मार्ग पर क्षतिग्रस्त सड़कों का मरम्मत कार्य प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। जिला पंचायत को निर्देशित किया कि कांवड़ पटरी मार्ग पर झाड़ियों की कटाई, सार्वजनिक शौचालयों एवं स्नान गृहों की साफ-सफाई तथा आवश्यक मरम्मत का कार्य समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए।

विद्युत विभाग को निर्देश दिए गए कि कांवड़ पटरी मार्ग पर निर्बाध विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए तथा जहां भी विद्युत तार झूल रहे हैं, उन्हें तत्काल दुरुस्त किया जाए ताकि किसी प्रकार की दुर्घटना की संभावना न रहे। जल संस्थान को निर्देशित किया गया कि कांवड़ पटरी मार्ग पर पेयजल की समुचित व्यवस्था समय से सुनिश्चित की जाए। वहीं स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए गए कि मार्ग पर स्थापित किए जाने वाले स्वास्थ्य शिविरों के लिए पर्याप्त चिकित्सक, पैरामेडिकल स्टाफ, दवाइयों एवं आवश्यक उपकरणों की व्यवस्था पहले से सुनिश्चित की जाए, ताकि किसी भी आपात स्थिति में श्रद्धालुओं को तत्काल उपचार उपलब्ध कराया जा सके। जिलाधिकारी ने पुलिस विभाग को कांवड़ यात्रा के दौरान प्रभावी यातायात प्रबंधन एवं भीड़ नियंत्रण की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि कांवड़ पटरी मार्ग पर विद्युत पोलों के नीचे किसी भी प्रकार के फड़ अथवा अस्थायी स्टॉल लगाने की अनुमति न दी जाए तथा इसकी नियमित निगरानी की जाए।

वन विभाग को निर्देशित किया गया कि मार्ग पर जहां पेड़ों की लॉपिंग (शाखाओं की छंटाई) आवश्यक है, वहां समय से अनुमति उपलब्ध कराते हुए कार्य पूर्ण कराया जाए। बैठक में नगर निगम एवं जिला पंचायत को कांवड़ यात्रा मार्गों, शिविर स्थलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर विशेष स्वच्छता अभियान चलाने तथा नियमित साफ-सफाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

20 टूर एवं ट्रैवल आपरेटरों के खिलाफकी गयी चालानी कार्रवाई

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी निखिल शर्मा ने बताया कि जिलाधिकारी हरिद्वार, मयूर दीक्षित एवं संभागीय परिवहन अधिकारी, देहरादून संदीप सैनी के निर्देशों के अनुपालन में आज हरिद्वार शहर स्थित शिवमूर्ति गली में बिना वैध लाइसेंस के सार्वजनिक परिवहन सेवाओं का संचालन कर रहे टूर एवं ट्रैवल ऑपरेटरों के विरुद्ध विशेष प्रवर्तन अभियान चलाया गया।

यह अभियान सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन), हरिद्वार नेहा झा के नेतृत्व में संचालित किया गया। अभियान के दौरान परिवहन विभाग की टीम द्वारा विभिन्न ट्रैवल एजेंसियों एवं बुकिंग कार्यालयों का गहन निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान पाया गया कि अनेक टूर एवं ट्रैवल ऑपरेटर बिना वैध लाइसेंस के यात्रियों की बुकिंग एवं सार्वजनिक परिवहन सेवाओं का संचालन कर रहे थे, जो मोटर वाहन अधिनियम, 1988 तथा सार्वजनिक सेवाओं द्वारा यात्रा कराने के लिए संचालित एजेंसियों एवं टिकटों की बिक्री हेतु विनियमावली, 2023 के प्रावधानों का उल्लंघन है।

निरीक्षण के उपरांत 20 टूर एवं ट्रैवल ऑपरेटरों के विरुद्ध नियमानुसार चालानी कार्रवाई की गई। सभी संबंधित संचालकों को भविष्य में वैध लाइसेंस प्राप्त किए बिना इस प्रकार का संचालन न करने के निर्देश भी दिए गए। अभियान के दौरान परिवहन विभाग की टीम द्वारा संचालकों को यह भी अवगत कराया गया कि बिना वैध लाइसेंस सार्वजनिक परिवहन सेवाओं का संचालन करना दंडनीय अपराध है तथा भविष्य में भी ऐसे मामलों में कठोर प्रवर्तन कार्रवाई जारी रहेगी। निरीक्षण के दौरान आवश्यक साक्ष्य संकलित किए गए तथा नियमानुसार निरीक्षण सह उल्लंघन विवरण तैयार किया गया।

सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) नेहा झा ने बताया कि यात्रियों की सुरक्षा, पारदर्शी परिवहन व्यवस्था तथा नियमों का प्रभावी अनुपालन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से इस प्रकार के विशेष अभियान आगे भी नियमित रूप से संचालित किए जाएंगे। सभी टूर एवं ट्रैवल संचालकों से अपील की गई है कि वे नियमानुसार आवश्यक लाइसेंस प्राप्त कर ही सार्वजनिक परिवहन सेवाओं का संचालन करें तथा मोटर वाहन अधिनियम एवं प्रचलित नियमों का पूर्णतः पालन करें।

विश्व जूनोटिक रोग दिवस निकाली जागरूकता साइक्लिंग रैली

संवाददाता

देहरादून। विश्व जूनोटिक रोग दिवस के अवसर पर देहरादून साइक्लिंग क्लब द्वारा जन-जागरूकता के उद्देश्य से एक विशेष साइक्लिंग रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ प्रातः प्रेमनगर चौक से हुआ, जो बल्लूपुर चौक, गढ़ी कैंट, सप्लाई चौक होते हुए किमाड़ी तक पहुँची।

इस अवसर पर क्लब के अध्यक्ष हरि सिमरन सिंह ने कहा कि विश्व जूनोटिक रोग दिवस का उद्देश्य उन बीमारियों के प्रति लोगों को जागरूक करना है जो पशुओं से मनुष्यों में फैलती हैं। उन्होंने बताया कि रेबीज, बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, निपाह वायरस जैसी अनेक बीमारियाँ जूनोटिक रोगों की श्रेणी में आती हैं। इनसे बचाव के लिए स्वच्छता, पशुओं का समय पर टीकाकरण, पर्यावरण संरक्षण तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि नियमित साइक्लिंग न केवल शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और प्रदूषण कम करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस साइक्लिंग रैली में हरिसिमरन सिंह, सुरेन्द्र कुमार, जयंती प्रसाद, प्रणय पंत, मोहम्मद हैरिस, प्रांजल कपूर, अर्नब पॉल, चित्रांग, अमन, चौतन्य सहित क्लब के अनेक सदस्य उपस्थित रहे।

देहरादून साइक्लिंग क्लब ने आम नागरिकों से अपील की कि वे नियमित रूप से साइक्लिंग एवं अन्य शारीरिक गतिविधियों को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं तथा जूनोटिक रोगों के प्रति जागरूक रहकर स्वयं और समाज को सुरक्षित रखने में अपना योगदान दें। क्लब ने भविष्य में भी स्वास्थ्य, पर्यावरण एवं सामाजिक जागरूकता से जुड़े ऐसे कार्यक्रम निरंतर आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया।

मुख्य सचिव की अध्यक्षता नाबार्ड की उच्च स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न

हमारे संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन की अध्यक्षता में आज सचिवालय में नाबार्ड की उच्च स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान मुख्य सचिव ने प्राईमरी सेक्टर पर जोर देते हुए, ग्रामीण अवसंरचना विकास कोष (आरआईडीएफ) के तहत् अधिक से अधिक प्रोजेक्ट शामिल किए जाने के निर्देश विभागों को दिए।

मुख्य सचिव ने सभी विभागों को अपने प्रोजेक्ट अगले तीन दिन में पोर्टल पर अपलोड किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि गतिमान परियोजनाओं की प्रतिपूर्ति के लिए भी प्रस्ताव शीघ्र अपलोड किए जाएं, ताकि समय से प्रतिपूर्ति जारी की जा सके। उन्होंने धीमी गति से चल रहे प्रोजेक्ट्स पर भी चिंता जाहिर करते हुए पुरानी परियोजनाओं को प्राथमिकता पर पूर्ण किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभागीय सचिव स्लो गोईंग प्रोजेक्ट्स की साप्ताहिक समीक्षा करते हुए कार्यों को पूर्ण कराएं।

मुख्य सचिव ने कहा कि सभी विभागों द्वारा एकीकृत दृष्टिकोण अपनाते हुए प्रोजेक्ट तैयार करने पर ही किसी क्षेत्र में योजनाओं का उचित लाभ मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने की आवश्यकता है। कृषि-बागवानी क्षेत्र में सम्पूर्ण लिंकेज के साथ एक से अधिक क्लस्टर्स को शामिल करते हुए बड़े प्रोजेक्ट बनाए जाएं। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रोजेक्ट्स में एक क्षेत्र के आसपास के सभी क्लस्टर्स को कोल्ड चेन, इंफ्रास्ट्रक्चर, ट्रांसपोर्टेशन आदि की सुविधा एक ही प्राजेक्ट के अंतर्गत मिल सके।

मुख्य सचिव ने इसके लिए नाबार्ड से तकनीकी एवं विशेषज्ञ सहायता उपलब्ध कराए जाने का भी अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि नाबार्ड को गतिशक्ति पोर्टल का एक्सेस उपलब्ध कराया जाए, ताकि वह सभी परियोजनाओं का अध्ययन कर पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 4, 5 क्षेत्र चिन्हित करते हुए इन चिन्हित क्षेत्रों के एक सम्पूर्ण लिंकेज प्लान तैयार करने में तकनीकी एवं विशेषज्ञ सहायता उपलब्ध करा सकें। इस पर नाबार्ड ने शीघ्र एक टीम लगाए जाने के आश्वासन दिया।

मुख्य सचिव ने कहा कि उद्यान विभाग को पॉलीहाऊस परियोजना को शीघ्र से शीघ्र पूर्ण कराए जाने हेतु सचिव स्तर पर साप्ताहिक समीक्षा करते हुए लगातार निगरानी किए जाने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने पशुपालन विभाग को भी सभी जनपदों में बड़े स्तर के अस्पतालों को स्थापित कर दूरस्थ क्षेत्रों में पशुओं के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के निर्देश दिए। मुख्य सचिव ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि जो प्रोजेक्ट पूर्ण हो चुके हैं, उन प्रोजेक्ट्स के पूर्ण होने का प्रमाण-पत्र एवं रिपोर्ट, शीघ्र से शीघ्र नाबार्ड को उपलब्ध कराए जाएं।

पुल से छलांग लगाने वाले नाबालिग का शव बरामद

हमारे संवाददाता

नैनीताल। गौला पुल से छलांग लगाने वाले 17 वर्षीय किशोर प्रियांशु का शव एसडीआरएफ ने आज सुबह गहन सर्च अभियान के बाद बरामद कर लिया। रविवार शाम से ही एसडीआरएफ की टीम गौला नदी में बने चेक डैम के गहरे पानी में किशोर की लगातार तलाश कर रही थी, लेकिन देर रात तक कोई सफलता नहीं मिली।

आज सुबह एक बार फिर एसडीआरएफ ने सर्च अभियान शुरू किया। कई घंटों की मशक्कत के बाद टीम ने गहरे पानी से प्रियांशु का शव बाहर निकाल लिया। सूचना मिलते ही प्रशासन और पुलिस की टीम भी मौके पर पहुंच गई। तहसीलदार कुलदीप पांडे ने बताया कि मृतक की पहचान 17 वर्षीय प्रियांशु के रूप में हुई है, जो हल्द्वानी के मोतीनगर क्षेत्र का निवासी था और 12वीं कक्षा का छात्र था।

पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है। यह पता लगाया जा रहा है कि प्रियांशु ने किन परिस्थितियों में गौला पुल से छलांग लगाई। पुलिस परिजनों और अन्य लोगों से पूछताछ कर घटना के कारणों का पता लगाने का प्रयास कर रही है।

चाकू सहित एक दबोचा

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। वारदात की फिराक में घूम रहे एक बदमाश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके कब्जे से एक धारदार चाकू बरामद किया गया है।

जानकारी के अनुसार बीती रात कोतवाली बहादराबाद पुलिस गश्त पर थी इस दौरान जब पुलिस सुमन नगर रेगुलेटिंग पुल की तरफ जाने वाला रास्ते पर पहुंची तो उसे वहां एक संदिग्ध व्यक्ति घूमता हुआ दिखायी दिया। पुलिस ने जब उसे रूकने का इशारा किया तो वह सकपका कर भागने लगा। इस पर उसे घेर कर दबोचा गया। तलाशी के दौरान उसके पास से एक धारदार चाकू बरामद हुआ। पूछताछ में उसने अपना नाम अयान पुत्र रमजानी निवासी सलेमपुर दादूपुर कोतवाली रानीपुर हरिद्वार बताया। पुलिस ने उसे आर्म्स एक्ट की धाराओं में गिरफ्तार कर लिया गया है।

जानलेवा हमले का आरोपी गिरफ्तार

हमारे संवाददाता

देहरादून। मामूली कहा सुनी के चलते हुए विवाद के दौरान दोस्त पर जानलेवा हमला करने वाले आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिसके पास से घटना में प्रयुक्त धारदार हथियार बरामद हुआ है।

जानकारी के अनुसार बीते रोज कोतवाली प्रेमनगर पर रजत मलिक द्वारा तहरीर देकर बताया गया था कि उनका भाई कृष्णा अपने दोस्त शिवानंद बालियान के साथ मुज्जफरनगर से देहरादून घूमने के लिए आया था। देहरादून घूमने के दौरान प्रेम नगर दशहरा ग्राउंड में शिवानंद द्वारा उनके भाई को जान से मारने की नीयत से धारदार हथियार से उसके पेट तथा जाघ पर वार कर गम्भीर रूप से घायल कर दिया। प्राप्त तहरीर के आधार

पर पुलिस ने तत्काल मुकदमा दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी गयी। आरोपी की तलाश में जुटी पुलिस टीम द्वारा आज सुबह एक सूचना के बाद घटना को अंजाम देने वाले आरोपी शिवानंद बालियान उर्फ शिवा को पौधा रोड से गिरफ्तार किया गया, जिसकी निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त धारदार हथियार बरामद किया गया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि वह मूल रूप से मुजफ्फरनगर का रहने वाला है तथा अपने दोस्त कृष्णा के साथ मुजफ्फरनगर से देहरादून घूमने के लिए आया था, घूमने के दौरान वे दोनों अपने एक अन्य साथी से मिलने उसके सेलाकुई स्थित कमरे में गए, जहां उन्होंने साथ में बैठकर शराब पी। शराब पीने के बाद आरोपी शिवानंद मुजफ्फरनगर वापस जाने की जिद करने लगा, जबकि कृष्णा द्वारा उसे देहरादून में ही रुकने को कहा, इस बात को लेकर उन दोनों के मध्य विवाद हो गया तथा वापसी में दशहरा ग्राउंड के पास उक्त विवाद के चलते हुई आपसी बहस में आरोपी शिवानंद द्वारा आवेश में आकर अपने पास रखे धारदार हथियार से कृष्णा पर वार कर दिया और मौके से फरार हो गया। बहरहाल पुलिस ने उसे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया है।

गोदियाल का धामी पर 'तंज'

◆दिल्ली का फैसला या जनता का जनादेश, धामी पर गोदियाल के बयान से सुलगी सियासत

◆सलेक्टेड सीएम बनाम जनादेश का चेहरा, उत्तराखंड में शुरु हुई नई राजनीतिक जंग

◆गोदियाल ने धामी की राजनीतिक वैधता पर उठाए सवाल, भाजपा ने बताया जनादेश का अपमान

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। उत्तराखंड की राजनीति में चुनावी गर्मी अभी दूर है, लेकिन सियासी पारा अभी से चढ़ने लगा है। इसकी वजह बना कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष गणेश गोदिया का वह बयान, जिसमें उन्होंने मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी को सलेक्टेड सीएम बताया। गोदियाल का सीधा तंज था कि धामी जनता की पहली पसंद बनकर नहीं, बल्कि पार्टी नेतृत्व की पसंद बनकर मुख्यमंत्री बने हैं। यानी उत्तराखंड की सत्ता की चाबी देहरादून से ज्यादा दिल्ली के हाथ में है। कांग्रेस ने इस बयान के जरिए भाजपा के सबसे मजबूत चेहरे पर सीधे राजनीतिक वार किया है।

कांग्रेस इस नैरेटिव को गढ़ना चाहती है कि मुख्यमंत्री धामी का राजनीतिक कद जनता से ज्यादा पार्टी नेतृत्व के भरोसे खड़ा हुआ है। पार्टी का कहना है कि राज्य के बड़े फैसलों से लेकर नेतृत्व परिवर्तन तक, भाजपा में अंतिम मुहर दिल्ली की लगती है। इसलिए सलेक्टेड सीएम का तंज केवल व्यक्ति पर नहीं, बल्कि भाजपा की कार्यशैली पर हमला है। भाजपा ने इस बयान को लपक लिया। पार्टी नेताओं ने कहा कि धामी के नेतृत्व में भाजपा ने लगातार दूसरी बार सरकार बनाई और मुख्यमंत्री ने जनता के बीच जाकर अपना जनसमर्थन भी साबित किया। भाजपा का आरोप है कि कांग्रेस मुद्दों की लड़ाई हार चुकी है, इसलिए अब व्यक्तिगत और राजनीतिक विशेषणों के सहारे माहौल बनाने की कोशिश कर रही है। पार्टी यह भी मानती है कि मुख्यमंत्री धामी उसकी सबसे बड़ी राजनीतिक पूंजी हैं। इसलिए कांग्रेस का हमला सीधे भाजपा के चुनावी चेहरे पर हमला है।

राजनीतिक जानकारों की मानें तो यह विवाद सिर्फ एक बयान का नहीं है। यह 2027 की लड़ाई का शुरुआती ट्रेलर है। कांग्रेस दिल्ली बनाम उत्तराखंड और सलेक्टेड बनाम जनता का नेता का नैरेटिव खड़ा करना चाहती है। वहीं भाजपा विकास, स्थिर नेतृत्व और जनादेश की कहानी को आगे बढ़ाने में जुटी है।

उत्तराखंड की राजनीति अब मुद्दों के साथ-साथ शब्दों की लड़ाई में भी उतर चुकी है। सलेक्टेड सीएम एक वाक्य जरूर है, लेकिन इसके पीछे बड़ा राजनीतिक संदेश छिपा है- कांग्रेस मुख्यमंत्री धामी की राजनीतिक स्वीकार्यता को चुनौती देना चाहती है और भाजपा इसे जनादेश पर हमले के रूप में पेश कर रही है। चुनाव अभी दूर हैं, लेकिन इतना साफ है कि अब सियासत केवल सड़क, बिजली और पानी पर नहीं चलेगी। लड़ाई इस बात पर भी होगी कि उत्तराखंड का नेतृत्व आखिर तय कौन करता हैकृजनता या पार्टी का शीर्ष नेतृत्व?

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकार:
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालय: दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोट: सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।